



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

हिमज्योति

जनवरी 2026 से जून 2026 | अंक सत्रहवाँ

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) उत्तराखण्ड, देहरादून

वार्षिक कार्यक्रम-2026-27

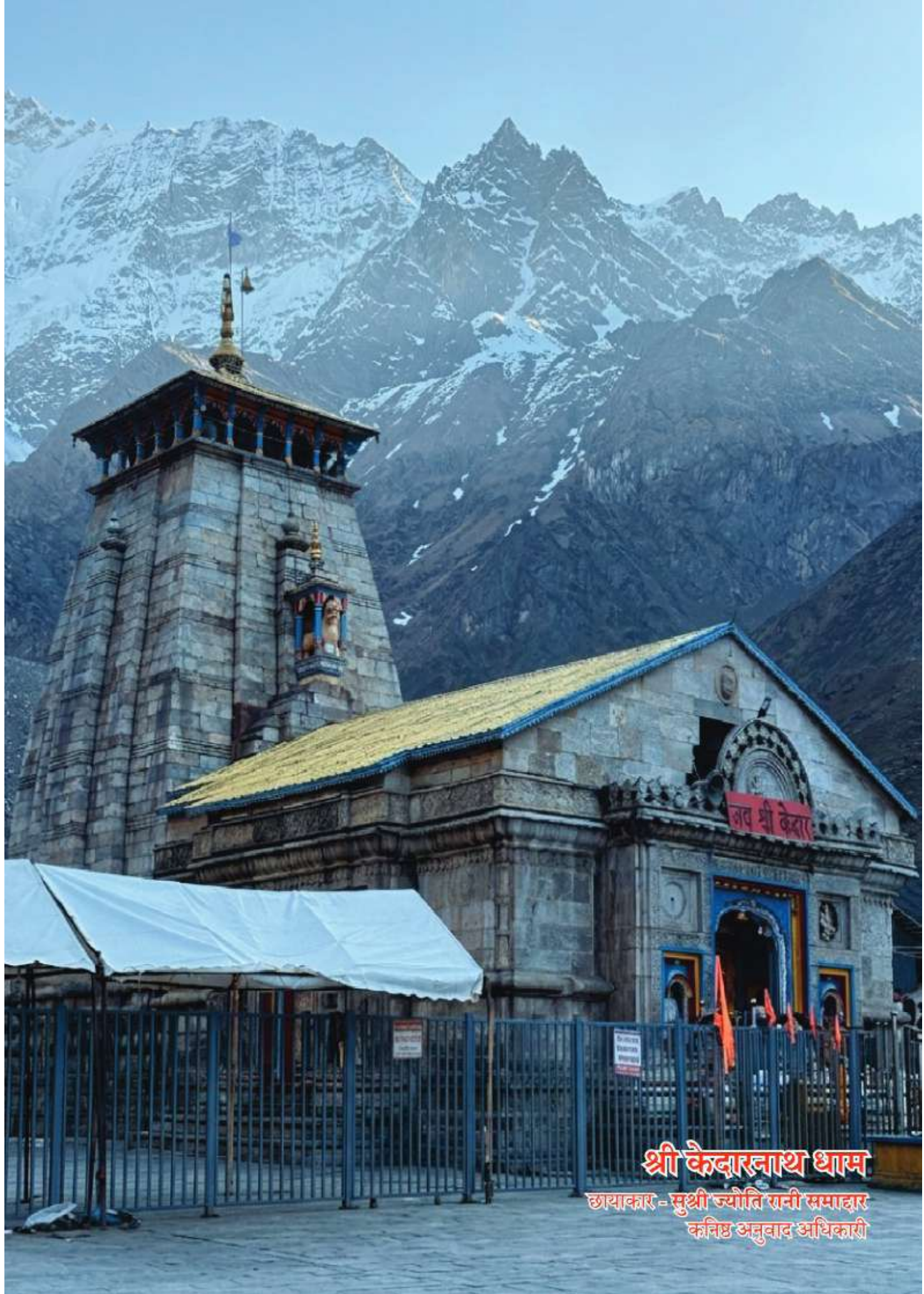
क्र. सं.	कार्य विवरण	"क" क्षेत्र	"ख" क्षेत्र	"ग" क्षेत्र
1	हिन्दी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100 % 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100 % 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 70 % 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/ संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/ व्यक्ति 100 %	1. ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90% 2. ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 90% 3. ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 60% 4. ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/ संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/ व्यक्ति 90 %	1. ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 60 % 2. ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 60 % 3. ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 60 % 4. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/ संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/ व्यक्ति 60 %
2	हिन्दी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिन्दी में दिया जाना	100%	100%	100%
3	हिन्दी में टिप्पण	80%	55%	35%
4	हिन्दी माध्यम से प्रशिक्षण कार्य	75%	65%	35%
5	हिन्दी में डिक्शनरी/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं एवं सहायक द्वारा)	80%	70%	45%
6	हिन्दी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	70%	60%	35%
7	हिन्दी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9	जर्नल और मानक सन्दर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल सामग्री अर्थात् हिन्दी ई- पुस्तक, ई-हिन्दी समाचार पत्र, सीडी/ डीवीडी, पेनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिन्दी में अनुवाद व्यय की गयी राशि सहित हिन्दी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%	50%	50%
10	हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में काम करने की सुविधायुक्त इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों जिनमें कंप्यूटर भी शामिल है, की खरीद	100%	100%	100%
11	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्ड आदि द्विभाषी रूप में प्रदर्शित किये जाएं	100%	100%	100%
13	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों के अधिकारियों (उ.स./निदे/सं/स.) तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत) (ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण (iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियन्त्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का सम्बंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण	30% (न्यूनतम) 30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम) 30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम) 30% (न्यूनतम)
		वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण		
14	राजभाषा संबंधी बैठकें (क) हिन्दी सलाहकार समिति (ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 2 बैठकें वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक) वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)		
15	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया साहित्य का हिन्दी अनुवाद	100%	100%	100%
16	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहाँ संपूर्ण कार्य हिन्दी में हो	45%	35%	25%
		(न्यूनतम अनुभाग) सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहाँ अनुभाग जैसे कोई अवधारणा नहीं है, "क" क्षेत्र में कुल कार्य 45%, "ख" क्षेत्र में 30% और "ग" क्षेत्र में 20% कार्य हिन्दी में किया जाये।		

हिमज्योति

जनवरी 2026 से जून 2026 | अंक सत्रहवाँ



कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) उत्तराखण्ड, देहरादून



श्री केदारनाथ धाम

छायाकार - सुश्री ज्योति रानी समाहार
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी



सत्यमेव जयते



मो० परवेज़ आलम

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) उत्तराखण्ड

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि हमारे कार्यालय की प्रतिष्ठित गृह-पत्रिका "हिमज्योति" अपने गौरवशाली सफर के 17वें सोपान (अंक) पर पहुँच चुकी है। इस महत्वपूर्ण अवसर पर पत्रिका के सफल और अनवरत प्रकाशन के लिए मैं संपादक मंडल, सभी लेखक-कर्मचारियों और पाठकों को हार्दिक बधाई देता हूँ।

एक कार्यालय के रूप में, महालेखाकार कार्यालय न केवल वित्तीय सुशासन और पारदर्शिता का प्रहरी है, बल्कि यह राजभाषा हिन्दी के प्रसार और संवर्धन में भी सदैव अग्रणी रहा है। "हिमज्योति" का यह 17वां अंक हमारे अधिकारियों और कर्मचारियों की प्रशासनिक निष्ठा के साथ-साथ उनकी रचनात्मक अभिरुचि का भी एक जीवंत प्रमाण है। पत्रिका का नाम 'हिमज्योति' जिस प्रकार अंधकार को मिटाकर प्रकाश बिखेरने का प्रतीक है, ठीक उसी प्रकार यह पत्रिका हमारे कार्यालय के ज्ञान, अनुभवों और विचारों को सभी तक पहुँचाने का एक सशक्त माध्यम बनी हुई है।

सरकारी कामकाज में राजभाषा का प्रयोग केवल एक संवैधानिक दायित्व नहीं है, बल्कि यह हमारे देश की एकता और हमारी सांस्कृतिक पहचान का गौरव भी है। वर्तमान डिजिटल युग में, महालेखाकार कार्यालय लेखांकन के क्षेत्र में निरंतर नई तकनीकों और प्रणालियों को अपना रहा है। इन तकनीकी बदलावों के बीच, हमारे कर्मिकों द्वारा दैनिक सरकारी कार्यों में सरल, सुबोध और व्यावहारिक हिन्दी का प्रयोग करना अत्यंत सराहनीय है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका सभी कर्मियों को हिन्दी में मौलिक रूप से काम करने के लिए और अधिक प्रेरित करेगी।

प्रस्तुत अंक में समाहित विभागीय लेख, रचनात्मक कविताएँ, संस्मरण और समसामयिक विषय निश्चित रूप से पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक और पठनीय सिद्ध होंगे। यह पत्रिका हमारे सामूहिक प्रयासों और टीम भावना की सुंदर अभिव्यक्ति है। मैं इस अंक के सुरुचिपूर्ण और उद्देश्यपूर्ण प्रकाशन के लिए संपादक मंडल के अथक श्रम की सराहना करता हूँ तथा सभी पाठकों को इसके रसास्वादन के लिए शुभकामनाएँ देता हूँ।

"हिमज्योति" के 17वें अंक की सफलता और कार्यालय की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए मेरी ओर से अनंत शुभकामनाएँ।

परवेज़ आलम

मुख्य संरक्षक

धनौल्टी का ग्रामीण परिदृश्य

छायाकार - सुश्री वरुणिका शर्मा
लिपिक





सत्यमेव जयते



सुश्री सरिता कुमारी गुप्ता

वरिष्ठ उप महालेखाकार (लेखा एवं वी०एल०सी)

संदेश

कार्यालय की आधिकारिक गृह-पत्रिका "हिमज्योति" के 17वें अंक के सफल प्रकाशन पर मुझे अत्यंत हर्ष और संतोष की अनुभूति हो रही है। इस गरिमामयी और ज्ञानवर्धक अंक को पाठकों के समक्ष लाने के लिए मैं संपादक मंडल और सभी रचनाकारों को हृदय से बधाई देती हूँ।

"हिमज्योति" का यह 17वां पड़ाव इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि हमारे कार्यालय के अधिकारियों और कर्मचारियों ने राजभाषा हिन्दी को केवल एक सरकारी दायित्व के रूप में नहीं, बल्कि अपनी कार्य-संस्कृति के एक अभिन्न अंग के रूप में अपनाया है। महालेखाकार कार्यालय के अंतर्गत लेखा (Accounts) जैसे तकनीकी और जटिल कार्यों को करते हुए भी, कार्मिकों ने अपनी साहित्यिक और रचनात्मक प्रतिभा को इस पत्रिका के माध्यम से जीवित रखा है, जो कि अत्यंत सराहनीय है।

एक प्रशासनिक अधिकारी के रूप में मेरा यह मानना है कि राजभाषा हिन्दी का वास्तविक विकास तभी संभव है जब हम दैनिक पत्राचार, टिप्पण और आलेखन में सरल, सहज और आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग करें। "हिमज्योति" पत्रिका हमारे कार्मिकों को हिन्दी में सोचने और मौलिक रूप से लिखने के लिए प्रेरित करने का एक बेहतरीन मंच प्रदान करती है। इस अंक में शामिल विभिन्न विभागीय एवं समसामयिक लेख न केवल हमारे ज्ञानवर्धन में सहायक होंगे, बल्कि आपसी समन्वय और टीम भावना को भी सुदृढ़ करेंगे।

मैं पत्रिका के इस अंक को सुंदर और सुरुचिपूर्ण बनाने के लिए राजभाषा अनुभाग और संपादन से जुड़े सभी सहयोगियों के अथक प्रयासों और श्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा करती हूँ। मुझे पूरा विश्वास है कि "हिमज्योति" का यह अंक भी पिछले अंकों की भांति पाठकों के बीच अत्यंत लोकप्रिय, विचारोत्तेजक और संग्रहणीय सिद्ध होगा।

पत्रिका के सफल प्रकाशन और सभी पाठकों के उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी ओर से हार्दिक मंगलकामनाएं।

सरिता
संरक्षक

हिमालयी क्षेत्रों में पाया जाने वाला जयान का पुष्प

छायाकार - श्री प्रशांत किमोठी

खण्डीय लेखाधिकारी





सत्यमेव जयते

शुभकामनाएँ



श्री सुभाष चन्द्र ममगाँई

उप महालेखाकार (प्रशासन एवं निधि)

कार्यालय की राजभाषा गृह-पत्रिका "हिमज्योति" के 17वें अंक के गौरवशाली प्रकाशन पर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। इस रचनात्मक प्रयास को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए मैं संपादक मंडल और अपनी रचनाओं के माध्यम से इसमें योगदान देने वाले सभी सहकर्मियों को हार्दिक बधाई देता हूँ।

"हिमज्योति" पत्रिका अपने नाम के अनुरूप ही हर वर्ष हमारे कार्यालय में ज्ञान, सकारात्मकता और राजभाषा हिन्दी के प्रति एक नई ऊर्जा का संचार करती है। महालेखाकार कार्यालय के विभिन्न संवर्गों में प्रशासन, लेखा एवं हकदारी जैसे गंभीर व निरंतर चलने वाले दायित्वों के बीच, कर्मचारियों द्वारा साहित्य और संस्कृति के प्रति ऐसा अनुराग दिखाना वास्तव में प्रशंसनीय है। यह पत्रिका इस बात का प्रमाण है कि हमारे कर्मिकों में न केवल उत्कृष्ट प्रशासनिक क्षमता है, बल्कि उनमें गहरी साहित्यिक सोच भी मौजूद है।

सरकारी कामकाज में हिन्दी का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। हमारा यह निरंतर प्रयास होना चाहिए कि हम अपने दैनिक पत्राचार, टिप्पण और तकनीकी कार्यों में सरल और व्यावहारिक हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग करें। "हिमज्योति" का यह अंक हमारे सहयोगियों को राजभाषा के प्रति अपनी झिझक दूर करने और मौलिक लेखन की ओर अग्रसर होने के लिए एक उत्कृष्ट और सुलभ मंच प्रदान करता है।

इस अंक को ज्ञानवर्धक लेखों, कविताओं और प्रेरक संस्मरणों से सजाने के लिए राजभाषा अनुभाग और संपादन टीम ने जो कड़ी मेहनत की है, वह अत्यंत सराहनीय है। इसमें शामिल विभागीय जानकारीयाँ और समसामयिक विषय सभी पाठकों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होंगे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका का सत्रहवाँ अंक भी पाठकों के दिलों में अपनी एक अमिट छाप छोड़ेगा और एक संग्रहणीय अंक साबित होगा।

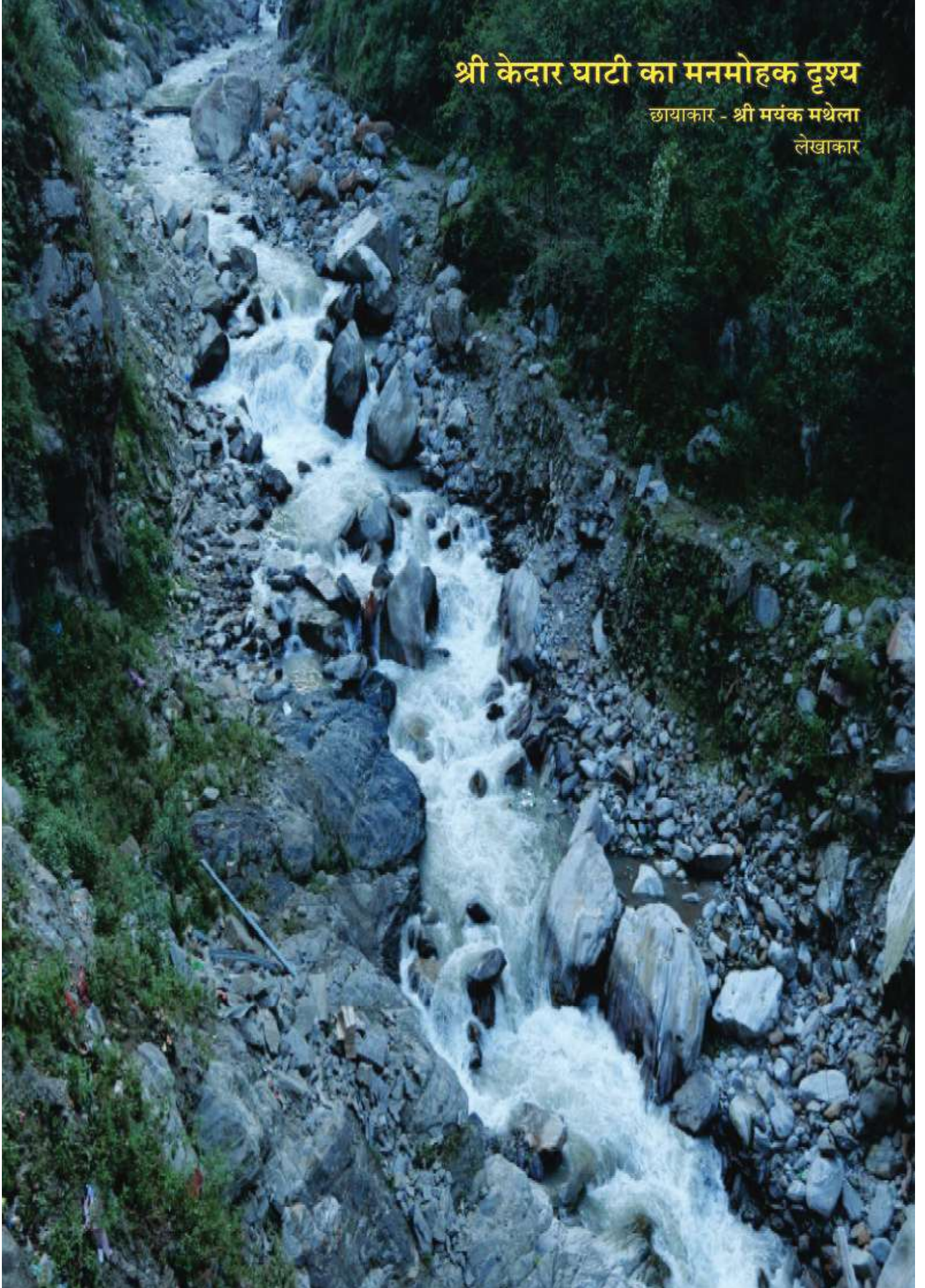
"हिमज्योति" के इस नए अंक की सफलता और हमारे सभी अधिकारियों व कर्मचारियों के सुखद भविष्य के लिए मेरी ओर से अनेक शुभकामनाएँ।

उपमहालेखाकार

श्री केदार घाटी का मनमोहक दृश्य

छायाकार - श्री मयंक मथेला

लेखाकार



प्रधान सम्पादक की कलम से.....✍

सुश्री पूनम शर्मा

सहायक निदेशक (राजभाषा)



आज 'हिमज्योति' के नवीन अंक को आपके हाथों में सौंपते हुए, मेरा हृदय अत्यंत हर्ष और एक आत्मिक संतोष से भरा हुआ है। सहायक निदेशक (राजभाषा) के रूप में, जब मैं पीछे मुड़कर देखती हूँ, तो पाती हूँ कि 'हिमज्योति' केवल पन्नों का कोई संकलन या हमारे कार्यालय की एक औपचारिक पत्रिका मात्र नहीं है। यह, हमारे साझा स्वप्नों की अभिव्यक्ति है और इस संस्थान रूपी परिवार की एक सामूहिक धरोहर है।

जिस तरह 'हिम' की शीतलता में एक ठहराव होता है और 'ज्योति' जीवन को प्रकाश से भर देती है, ठीक उसी प्रकार हमारी यह पत्रिका कार्यस्थल के तनावों के बीच हमारे भीतर की रचनात्मकता को एक नया जीवन देती है। इस अंक को तैयार करने में हमारे सहयोगियों ने जिस उत्साह के साथ अपनी रचनाओं, लेखों और अनुभवों को साझा किया है, वह सराहनीय है। इसमें हमारे साथियों की छिपी हुई साहित्यिक प्रतिभाएं, जैसे- कविताएं, कहानियाँ और प्रेरक संस्मरण बखूबी उभर कर सामने आई हैं।

जब पाठकों की लिखी कोई रचना 'हिमज्योति' में सम्मिलित करने हेतु मुझ तक पहुँचती है, तो मुझे गर्व होता है, मुझे खुशी होती है कि फाइलों के दायित्वों को निभाते हुए भी, आपके भीतर की संवेदनशीलता, वह कोमल भावना और मां भारती की भाषा के प्रति आपका अनुराग पूरी तरह जीवंत है। राजभाषा हिन्दी को सिर्फ एक सरकारी नियम मानकर नहीं, बल्कि अपनी संस्कृति की आत्मा मानकर जिस तरह आप सभी ने अपनाया है, वह मेरे लिए सबसे बड़ी प्रेरणा है। आप सभी के स्नेह के बिना यह पत्रिका अधूरी थी। यह अंक आपके हाथों में सौंपते हुए मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं अपने ही परिवार के सदस्यों को एक अमूल्य उपहार सौंप रही हूँ। आशा है, यह अंक आपके दिलों को छुएगा और हमारी इस भाषाई और सांस्कृतिक यात्रा को और अधिक ऊँचाइयों पर ले जाएगा।

मैं पत्रिका के इस अंक को साकार रूप देने के लिए प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े सभी साथियों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ। आपके सुझाव और प्रतिक्रियाएं हमारे लिए सदैव बहुमूल्य रहेंगी ताकि हम भविष्य में इसे और अधिक उत्कृष्ट बना सकें।

आइए, हम सब मिलकर विकास और रचनात्मकता के इस 'हिमज्योति' पथ पर निरंतर आगे बढ़ते रहें।

शुभकामनाओं सहित,

प्रधान सम्पादक

सम्पादक मंडल



- बैठे हुए (बाएँ से दाएँ) - सुश्री सरिता कुमारी गुप्ता, वरि० उप महालेखाकार (लेखा एवं वी०एल०सी०) - संरक्षक
मो० परवेज़ आलम, महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) उत्तराखण्ड - मुख्य संरक्षक
श्री सुभाष चन्द्र ममगाँई, उप महालेखाकार (प्रशासन एवं निधि) - विशेष सहयोग
- खड़े हुए (बाएँ से दाएँ) - सुश्री पूनम शर्मा, सहायक निदेशक (राजभाषा) - प्रधान सम्पादक
डॉ० दिनेश शर्मा, सहायक लेखाधिकारी - सम्पादक

सम्पादकीय

आज 'हिमज्योति' के सत्रहवें अंक को प्रस्तुत करते हुए राजभाषा हिन्दी के निरन्तर बदलते परिदृश्य पर विचार करना प्रासंगिक जान पड़ता है। इस अंक में संकलित लेख, कहानियाँ और कविताएँ जहाँ एक ओर कार्मिकों की वैचारिक अन्तर्दृष्टि को रेखांकित करते हैं, वहीं दूसरी ओर राजभाषा के आधुनिक और व्यावहारिक पक्ष पर गम्भीर मंथन की माँग भी करते हैं।

आज का डिजिटल युग राजभाषा नीति के क्रियान्वयन को एक नए मोड़ पर ले आया है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), जनरेटिव एआई मॉडल्स, न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन और एडवांस्ड वॉइस-टू-टेक्स्ट जैसी अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों के साथ-साथ हाल ही में विमोचित ई-टूल्स जैसे 'कंठस्थ 2.0', 'लीला हिंदी प्रवाह' और 'ई-महाशब्दकोश' ने भाषा की बाधाओं को समाप्त करने में निर्णायक भूमिका निभाई है। आज आवश्यकता केवल हिन्दी के औपचारिक प्रयोग की नहीं, बल्कि राजभाषा के साथ इन नवीनतम तकनीकों को सहजता से एकीकृत करने की है, ताकि सरकारी कामकाज में गति, पारदर्शिता और गुणवत्ता सुनिश्चित हो सके।

पर्यावरण संरक्षण और प्रभावी अपशिष्ट प्रबंधन, क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन की आख्या, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और पुस्तकों के द्वंद्व से लेकर वैश्वीकरण के आर्थिक विषयों पर अधिकारियों द्वारा व्यक्त किए गए विचार यह स्पष्ट करते हैं कि राजभाषा अब केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि तकनीकी और सामयिक संवाद की भाषा बन चुकी है।

यह अंक पाठकों के समक्ष प्रशासनिक उत्तरदायित्वों और समकालीन तकनीकी परिवर्तन के बीच एक संतुलित विमर्श प्रस्तुत करने का एक सार्थक प्रयास है।

— सम्पादक

पत्रिका परिवार

मुख्य संरक्षक

मो० परवेज़ आलम

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) उत्तराखण्ड

संरक्षक

सुश्री सरिता कुमारी गुप्ता

वरिष्ठ उप महालेखाकार (लेखा एवं वी०एल०सी०)

विशेष सहयोग

श्री सुभाष चन्द्र ममगाँई

उप महालेखाकार (प्रशासन एवं निधि)

प्रधान सम्पादक

सुश्री पूनम शर्मा

सहायक निदेशक (राजभाषा)

सम्पादक

डॉ० दिनेश शर्मा

सहायक लेखाधिकारी

साज- सज्जा एवं टंकण

सुश्री ज्योति रानी समाद्वार

कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

आवरण पृष्ठ

पफ-पाउडर के वृक्ष पर क्रिम्सन सनबर्ड

(छायाकार : डॉ० दिनेश शर्मा, स०ले०अ०)

पार्श्व पृष्ठ

उत्तराखण्ड की सुपिन नदी का तट

(छायाकार : श्री शिवम सिंह, ख०ले०अ०)

(रचनाकारों के विचारों से सम्पादक मंडल की सहमति आवश्यक नहीं है।)

आपकी प्रतिक्रियाएँ

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी गृह पत्रिका "हिमज्योति" का 16वां अंक पढ़कर अत्यंत प्रसन्नता हुई। पत्रिका में संकलित लेख, कविताएँ तथा विविध रचनाएँ न केवल साहित्यिक अभिरुचि को समृद्ध करती हैं, बल्कि कार्यालय में हिन्दी के प्रयोग को भी सुदृढ़ एवं प्रोत्साहित करती हैं। पत्रिका का संपादन, विषय-वस्तु का चयन एवं प्रस्तुतीकरण उच्च स्तर का है। पत्रिका की सभी रचनाएँ पठनीय एवं उत्कृष्ट हैं; विशेषकर "पल भर का ठहराव", "भारत की संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी", "समय की धारा में", "नन्ही सी जान गौरैया" एवं "बनराकस" इत्यादि रचनाएँ अत्यधिक प्रशंसनीय हैं।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. एवं हक.) बिहार, पटना

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है। पत्रिका में सम्मिलित चित्रांकन एवं कार्यालयीन गतिविधियों की झलकियाँ मनमोहक हैं। पत्रिका की भाषा सहज, सरल एवं प्रभावशाली है। पत्रिका में प्रस्तुत रचनाएँ प्रशंसनीय एवं रोचक हैं। विशेषतः "समय की धारा में", "नन्ही सी जान गौरैया", "पल भर का ठहराव", "मैं और वो", "चिड़िया", "भारत की संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी" एवं "बनराकस" सराहनीय हैं।

क्षेत्रीय क्षमता निर्माण संस्थान, प्रयागराज

आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका "हिमज्योति" के 16वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, इसके लिए धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ खासकर श्री विक्रान्त कुमार का लेख "समय की धारा में", डॉ० दिनेश शर्मा की कविता "निम्नगा और पाषाण" श्री मयंक मथेला का यात्रा वर्णन "हिमालय की गोद में: मेरी एक रूहानी यात्रा", श्री अंकित भट्ट का यात्रा वर्णन "भूटान-यात्रा वृत्तान्त", श्री राजेश अधिकारी का यात्रा वृत्तान्त "मेरी मथुरा यात्रा", श्री प्रभात कुमार द्विवेदी का यात्रा वर्णन "साहस की लहरें-मेरा ऋषिकेश एडवेंचर" और श्री सत्य प्रकाश सिंह का लेख "बनराकस" आदि रोचक, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. एवं हक.) केरल, तिरुवनंतपुरम

"हिमज्योति" उत्कृष्ट रचनाओं का सुन्दर संकलन है। पत्रिका के मुख्य पृष्ठ सहित अन्य कार्यक्रमों के चित्र अत्यंत आकर्षक, दर्शनीय व अनुभूतिपूर्ण होने के साथ-साथ पत्रिका को और अधिक सुंदरता प्रदान कर रहे हैं। पत्रिका में निहित संपूर्ण रचनाएँ पठनीय, रोचक, ज्ञानवर्धक एवं महत्त्वपूर्ण संदेशों से परिपूर्ण हैं। इनमें से "निम्नगा और पाषाण", "पल भर का ठहराव" "जुगनू वाली रात की कहानी" और "बनराकस" विशेष अच्छी हैं। आशा है कि यह पत्रिका आगे भी अपने रोचक विषयों से पाठकों का ज्ञानवर्धन एवं राजभाषा के प्रचार-प्रसार में सार्थक मंच उपलब्ध कराती रहेगी।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) ओडिशा, भुवनेश्वर

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित 'हिमज्योति' के 16वें अंक के ई-पत्रिका की प्राप्ति हुई। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक हैं। साथ ही साथ पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षक है। कविताएँ और लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं। इनमें से जो रचनाएँ अति उत्तम लगीं वे हैं- "निम्नगा और पाषाण", "हिमालय का महाकुंभ है माँ नंदादेवी राजजात", "नन्ही सी जान:- गौरैया", "पल भर का ठहराव", "अंतिम महीने के अंतिम दिन", "चिड़िया" तथा "मेरी मथुरा यात्रा" आदि।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार, लेखापरीक्षा (द्वितीय), पश्चिम बंगाल, कोलकाता

अनुक्रमणिका

क्र० सं०	रचनाकार (सर्वश्री/सुश्री)	रचना	विधा	पृष्ठ संख्या
1.	शिवम लिलहौरी	माय नेम इस बांड	लेख	14
2.	विनोद कुमार शर्मा	स्वच्छ पर्यावरण: प्रभावी अपशिष्ट प्रबंधन की बढ़ती आवश्यकता	लेख	16
3.	शिवम लिलहौरी	जिसकी जूती, उसका सर	कहानी	18
4.	अंकित भट्ट	विरासत का ताला	कहानी	20
5.	शक्ति सुमन	स्टेशन	कविता	24
6.	जयदीप	कर्तव्य की पगडंडियाँ	कहानी	25
7.	डॉ० दिनेश शर्मा	सौम्य पर दृढ़: संवाद का आध्यात्मिक सेतु	लेख	27
8.	अजय कुमार पाल	धारा का रुख	कविता	30
9.	सत्य प्रकाश सिंह	आइये कभी बिहार में	लेख	31
10.	जसवंत सिंह	स्त्री	कविता	32
11.	विक्रान्त कुमार	मौन के उस पार	कविता	33
12.	अपूर्वा सिंह	रंग और कुदरत	लेख	34
13.	पूनम शर्मा	क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन -2025, त्रिपुरा	रिपोतार्ज	36
14.	सुशील कुमार देवली	गज़ल	गज़ल	38
15.	संजीव जखमोला	गज़ल	गज़ल	39
16.	संदीप शर्मा	मेरी कहानी	कविता	40
17.	राजेश अधिकारी	पुस्तकें बनाम आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस	लेख	41
18.	शिवम सिंह	बादल- वास्को उड़ान गाथा	कहानी	43
19.	विक्रान्त कुमार	लज्जा : शक्ति का मौन स्वरूप	लेख	46
20.	एस० जे० रॉय चौधरी	MAFANG ETF: वैश्विक तकनीकी क्रांति में निवेश का प्रवेश द्वार	लेख	48
21.	प्रभात कुमार द्विवेदी	हिन्दराज और विश्वास	कहानी	50
22.	शिवम सिंह	सांत्वना	कविता	52
23.	कीर्तिराम नौटियाल	जीतू बगड्वाल	लोक-कथा	53



वह मसूरी की एक ऐसी बर्फीली शाम थी, जो आज भी मेरी यादों में जम सी गई है। पारा लगातार गिर रहा था और हिमालय से आती ठंडी हवाएँ गढ़वाल की वादियों को सुन्न कर रही थीं। उस कड़कड़ाती ठंड में, जहाँ लोग घरों में दुबके थे, मॉल रोड का एक बुक डिपो, प्रेम और आदर की एक अनोखी गर्माहट से महक रहा था। वहाँ पाठकों की एक लंबी कतार लगी थी। हम भी उसी कतार का एक हिस्सा बनकर, धड़कते दिल से अपने प्रिय लेखक रस्किन बॉन्ड जी के आने का इंतजार कर रहे थे। एक-एक पल सदियों जैसा बीत रहा था और आँखें बस उन्हीं को ढूँढ़ रही थीं। मन में बस यही दुआ थी कि वह जादुई लम्हा जल्दी आए जब मैं उनके सामने खड़ा होऊँगा। उनसे मिलने का वह खयाल ही इतना पावन और अवास्तविक था कि उसने मेरी रूह में एक साथ रोमांच और आँसुओं जैसी सिहरन पैदा कर दी थी।

तभी मेरे आगे खड़ी, दुबई से पधारी एक नन्हीं बच्ची ने गहरे उत्साह में अपनी सहेली की तरफ देखकर चहकते हुए कहा—'माय नेम इज बॉन्ड!' इस पर दूसरी बच्ची ने उसकी बात को आगे बढ़ाते हुए पूरा किया—'माय नेम इज बॉन्ड... रस्किन बॉन्ड!' और दोनों ही खिलखिलाकर हँस पड़ीं।

रंग-बिरंगे जैकेट, मफलर और टोपियाँ पहने, कड़ाके की ठंड में मुँह से भाप निकालते और हाथों में रस्किन बॉन्ड की किताबें थामे वे बच्चे आपस में इसी तरह की प्यारी चुहलबाजी में मशगूल थे। दूसरी ओर, हम जैसे साहित्य प्रेमी अपने मन के झरोखों में खोए हुए 'बॉन्ड साहब' (जैसा कि लैंडौर के लोग उन्हें प्यार से बुलाते हैं) की कहानियों का स्मृति-रंजन कर रहे थे।

वाकई, बॉन्ड साहब एक ऐसे महान लेखक हैं जिनकी जादुई कहानियों ने न जाने कितनी ही पीढ़ियों के बचपन को सँवारा और महकाया है। आज वे बच्चे, जो अब खुद बड़े होकर मेरी तरह माता-पिता बन चुके हैं, वे सचमुच कितने भाग्यशाली हैं न! जिन्हें समय के इस मोड़ पर आकर अपने उस पसंदीदा लेखक से स्वयं मिलने और चंद लम्हें गुफ्तगू करने का यह नायाब अवसर मिला। उस पल मॉल रोड के उस बुक डिपो में खड़ा होना ऐसा था, मानो हमारा पूरा का पूरा



बचपन एक बार फिर जी उठा हो। ऐसा लगा जैसे हम सब अतीत के गलियारों से दौड़ते हुए, हिमालय की वादियों में कहीं उस 'ब्लू अम्ब्रेला' के नीचे इकट्ठा होने के लिए 'द नाइट ट्रेन एट देओली' पर सवार हो गए हों। पुरानी यादों का एक समंदर आँखों के सामने तैर गया था।

खैर साहब, आखिरकार वह चिर-प्रतीक्षित घड़ी आई, बॉन्ड साहब पधारे और हमें भी उनसे मुख्तसर सी मुलाकात करने का वह अनमोल मौका मिला। दुकान के प्रवेश द्वार पर ही उनके बैठने के लिए एक साधारण सी कुर्सी-मेज रखी गई थी और उसके ठीक पीछे उनका ही एक भव्य, बड़ा सा पोस्टर लगाया गया था। जैसे ही मेरी बारी आई, मैंने अत्यंत आदर से झुककर अपनी किताबें उनके सामने रख दीं। जब तक उनके जादुई हाथ उन किताबों पर अपने दस्तखत दर्ज कर रहे थे, मैंने संक्षेप में उन्हें अपने बारे में बताया और अपने इस ब्लॉग व इसके लेखों का जिक्र उनसे साझा किया। मेरी बात सुनकर उन्होंने जो अगली पंक्ति कही, वह मेरे जीवन भर के लिए सबसे बड़ी प्रेरणा बन गई—'अच्छा,

लिखते रहो..... दिलों तक पहुँचने का प्रयास करो।' उनके इन चंद लफ्जों ने जैसे मेरे भीतर के लेखक को एक नई रूह, एक नया मकसद दे दिया था।

सौभाग्य से हमारा नंबर कतार में आखिरी था। इसके ठीक बाद दुकान के मालिक आए और मुलाकात की समय-समाप्ति की घोषणा करते हुए बॉन्ड साहब से चलने की गुजारिश करने लगे। विदा लेने से पहले हमने एक अदद फोटो की दरकार की, तो बॉन्ड साहब ने सहर्ष हामी भर दी। अपना फोन दुकानदार भाई साहब को थमाकर, हमने बॉन्ड साहब के साथ उस जादुई मुलाकात को हमेशा-हमेशा के लिए अपनी यादों और फोन के कैमरे में कैद कर लिया।

इसके बाद बॉन्ड साहब उठे और अपनी गाड़ी की ओर चल दिए। बाहर प्रशंसकों की भीड़ की धक्का-मुक्की बढ़ती जा रही थी और हम स्वतः ही बहते हुए सड़क के एक कोने में जा लगे।

यदि आप इस अहसास को महसूस कर सकते हैं, तो अवश्य आगे पढ़ें। गंभीरता से कहूँ तो, इस महान लेखक के व्यक्तित्व पर विचार करते हुए यह किसी रहस्य से कम नहीं लगता कि वे आज भी बिल्कुल उसी आत्मीय व्यक्तित्व के स्वामी कैसे बने हुए हैं, जिसकी छवि हमने अपने बीते बचपन के दिनों में, उनकी कल्पनाओं के टुकड़ों को जोड़कर मन में बनाई थी। अस्सी वर्ष से अधिक की आयु में भी उनकी वह चिर-परिचित मुस्कान, मासूमियत, बाल-सुलभ व्यवहार, सादगी, पवित्रता और अपने प्रशंसकों के लिए निश्छल प्यार वास्तव में वंदनीय है। अन्यथा आज के दौर में कौन सी नामचीन हस्ती इस ठिठुरती ठंड में, वह भी ढलती शाम के समय, अपने हिमालयी आरामदायक आशियाने से नीचे उतरकर अपने नन्हे और थोड़े बड़े हो चुके प्रशंसकों से मिलने चली आती है!

आज इस बात को पूरे आठ वर्ष गुजर चुके हैं, मगर वह पल अभी भी ज़ेहन में कहीं उतनी ही सरसराहट पैदा कर रहा है। अगर आप भी बॉन्ड साहब से इस मुलाकात का सटीक स्थान जानना चाहते हैं, तो 'बॉन्ड प्रेमियों' के लिए इसे एक कूट भाषा में साझा किया जा रहा है। जो इस प्रकार है - "बस, उस 'रूम ऑन द रूफ' तक पहुँचने के लिए 'रोड टू मसूरी' का अनुसरण करें, जो उस 'चेरी ट्री' के पास है जिसके नीचे 'द लोन फॉक्स डांसेज' यानी अकेली लोमड़ी नाचती है। जब आसमान में 'पेंथर्स मून' हो और 'एंग्री रिवर' अपने पूरे वेग से बह रही हो... तब 'रस्टी कम्स होम' ताकि वह अपने रचनाकार के सभी प्रशंसकों को 'रोड टू द बाज़ार्स' के रास्ते ले जाकर 'टेल्स ऑफ़ फॉस्टरगंज' सुना सके।"

यदि आप उपरोक्त कूट (कोड) संदेश को समझने में सक्षम नहीं हैं, तो निराश न हों। वे दिल्ली के लिए केवल श्री रस्किन बॉन्ड की प्रसिद्ध पुस्तकों के नाम थे, वरना हर कोई जानता है कि मसूरी की मॉल रोड पर स्थित 'कैब्रिज बुक डिपो' ही वह ऐतिहासिक ठिकाना है, जहाँ कतार में खड़े-खड़े इस ब्लॉग की संरचना गढ़ी गई थी। यहाँ केवल शनिवार के दिन ही जाएँ; बॉन्ड साहब हमेशा अपने उत्साही प्रशंसकों से मिलने के लिए वहाँ सहर्ष उपलब्ध रहते हैं, बशर्ते उनका स्वास्थ्य और मौसम की स्थिति इसकी अनुमति दे।

इस सदी के महान लेखक से व्यक्तिगत रूप से मिलने, थोड़ी बातचीत करने और अपनी पुस्तक पर उनके ऑटोग्राफ लेने के लिए बस इस स्थान पर चले जाएँ। पहाड़ों की बर्फीली शामों में, इस मुलाकात के उपरांत प्रसन्नचित्त मुद्रा में पास के कुलरी बाज़ार के किसी चाय के अड्डे पर सुस्ताएँ। वहाँ एक गिलास गरमा-गरम 'अदरक-इलायची वाली चाय' की चुस्कियाँ लेते हुए और उसके बाद स्वाद से भरे गरमा-गरम 'गुलाब जामुन' या 'गाजर के हलवे' का आनंद लेते हुए सोचें कि आप कितने भाग्यशाली हैं।

**"हमारी नागरी लिपि दुनिया की
सबसे वैज्ञानिक लिपि है।"**
राहुल सांकृत्यायन



स्वच्छ पर्यावरण: प्रभावी अपशिष्ट प्रबंधन की बढ़ती आवश्यकता



विनोद कुमार शर्मा

वरिष्ठ लेखाधिकारी (सेवानिवृत्त)

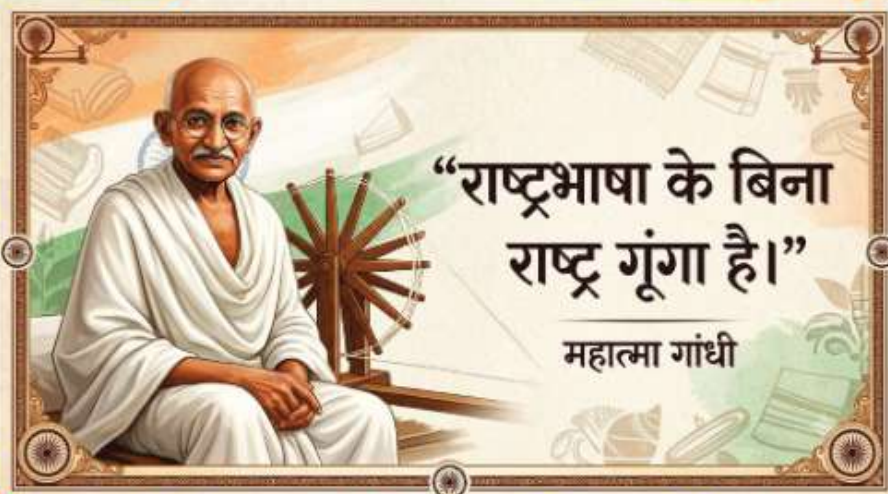
प्रदूषण से मुक्त वायु, शुद्ध जल एवं भूमि तथा उत्तम स्वास्थ्य सुरक्षित जीवन के लिए मानव की मूलभूत आवश्यकता है। बढ़ते शहरीकरण के कारण स्वच्छ पर्यावरण प्रभावित होने से मानव की यही मूलभूत आवश्यकताएं खतरे में पड़ती दिखाई देती हैं। जहाँ तक शहरीकरण की बढ़ती रफ्तार का प्रश्न है, स्थिति यह है कि आज ग्रामीण अंचल में निवास करने वाला लगभग हर तीसरा व्यक्ति शहर की ओर भाग रहा है। इसका बड़ा कारण शहरी क्षेत्रों में ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा बेहतर सुविधाएं और रोजगार के अवसर हैं। शहरी क्षेत्रों में मूलभूत सुविधाएं जैसे कि जलापूर्ति, सीवरेज, सार्वजनिक यातायात के अच्छे साधन, स्वास्थ्य सुविधाएं एवं अपशिष्ट प्रबंधन के भी ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा बेहतर एवं बुनियादी प्रबंध हैं तथा इनके सुदृढ़ीकरण की भी एक सतत प्रक्रिया गतिमान रहती है। कहने का अभिप्राय यह है कि आज भी नगरीय क्षेत्रों से दूर ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों को असुविधाओं का सामना करना पड़ता है।



गरिमापूर्ण जीवन व्यतीत करना प्रत्येक व्यक्ति का मौलिक अधिकार है और इसके लिए स्वच्छ पर्यावरण अपरिहार्य है। यह जीवन के लिए नितांत आवश्यक है। स्वच्छ पर्यावरण के अभाव में जीवन के लिए खतरनाक पर्यावरणीय बीमारियों, जो कि हवा, पानी और मिट्टी में मौजूद विषाक्त पदार्थों के संपर्क में आने के कारण फैलती हैं, का खतरा बढ़ जाता है। बड़े शहरों में झुग्गी-झोपड़ियों एवं छोटे कल-कारखानों के दूषित एवं अस्वास्थ्यकर वातावरण में, जहाँ पर जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं का अभाव होता है, निवास करने वाले एवं काम-धंधा करने वाले लोगों में पर्यावरणीय बीमारियाँ जैसे सांस के रोग, एलर्जी एवं फेफड़ों के रोग आदि, जो उनके रहने और काम करने वाले स्थानों के प्रदूषण के कारण फैलती हैं, अपेक्षाकृत अधिक पाई जाती हैं। बड़े-बड़े शहरों में झुग्गी-झोपड़ियों में सीवरेज, जल निकासी, शुद्ध पेयजल एवं अन्य बुनियादी सुविधाओं का अभाव होता है जिसके कारण संक्रामक बीमारियाँ तेजी से फैलती हैं। महानगरों में तो कई स्थानों पर कूड़े के पहाड़ जैसे दिखाई पड़ते हैं जहाँ पर पूरे शहर का टनों कचरा रोजाना डाला जाता है। इस कचरे से जहरीले पानी का रिसाव भी होता है जो कि मानव जीवन के लिए बहुत हानिकारक है। कचरे के निस्तारण की प्रभावी व्यवस्था के अभाव में अधिकांश नगर निकायों के लिए इसका निस्तारण करना एक गंभीर समस्या बनता जा रहा है। कचरे का पुनर्चक्रण किया जाना आवश्यक है तथा उसके पश्चात् उससे संसाधन विकसित किये जाने चाहिए। आबादी की बढ़ती रफ्तार एवं शहरीकरण के निरंतर विस्तार को देखते हुए नगरीय ठोस अपशिष्ट के प्रभावी एवं स्थायी निस्तारण की व्यवस्था समय की माँग है। आज शहरीकरण की स्थिति यह है कि छोटे-छोटे गाँव भी कस्बे या उपनगर का रूप लेते जा रहे हैं एवं उनमें बुनियादी आवश्यकताओं की माँग लगातार बढ़ती जा रही है। इसको देखते हुए नगरों के अन्दर ठोस अपशिष्ट के स्रोत पर ही पृथक्करण या सेग्रिगेशन एवं उसके अंतरण, परिवहन तथा प्रसंस्करण की दूरगामी प्रभावी व्यवस्था किये जाने की आवश्यकता है। बायोमेडिकल कचरा भी चिंता का विषय है, स्वास्थ्य संस्थानों से समन्वय स्थापित करके इसके निस्तारण की भी प्रभावी व्यवस्था की जानी चाहिए। बायोमेडिकल कचरा मानव स्वास्थ्य के लिए बहुत घातक है। इसका निस्तारण बहुत ही सुरक्षित तरीके से अनुभवी व्यक्तियों द्वारा किया जाना चाहिए। नगरों के अंतर्गत जमा होने वाला टनों ई-कचरा, जिसमें पुराने, खराब या अनुपयोगी घरेलू या आई.टी. उपकरण,

इलेक्ट्रॉनिक एवं बिजली के सामान भी शामिल हैं तथा जो पर्यावरण को गंभीर नुकसान पहुँचाने के साथ ही साथ मानव स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं, के निस्तारण हेतु भी प्रभावी प्रबंधन किया जाना चाहिए। कचरे का पुनर्चक्रण जितना प्रभावी तरीके से किया जायेगा उतना ही हमारी प्रकृति को भी सुरक्षित तथा स्वच्छ पर्यावरण मिलेगा।

नगरों का विकास आवश्यक है लेकिन इससे प्रकृति को किसी प्रकार का नुकसान नहीं पहुँचना चाहिए। विकास एवं प्रकृति में समन्वय बनाकर कार्य किया जाना चाहिए। अपशिष्ट प्रबंधन में निकायों को किसी भी प्रकार की शिथिलता न अपनाते हुए उत्तरदायित्वपूर्ण तरीके से जमीनी स्तर पर कार्य करना चाहिए तभी आमजन के लिए हितकारी हो सकता है। इसके लिए आवश्यक है कि जिम्मेदार अधिकारियों द्वारा भी समय-समय पर साईट पर जाकर अपशिष्ट प्रबंधन की व्यवस्था को देखना चाहिए तथा पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति गंभीर रुख अपनाना चाहिए। क्योंकि अपशिष्ट प्रबंधन का मुद्दा आम व्यक्ति के स्वास्थ्य एवं स्वच्छ पर्यावरण से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा है, अतः इसमें किसी भी प्रकार की शिथिलता पर्यावरण को प्रभावित करने के साथ ही आम लोगों के स्वास्थ्य के लिए भी हानिकारक है।





वैसे तो वट सावित्री की यह पावन कथा आप सबने सुन ही रखी होगी, फिर भी याददाश्त ताज़ा करने के लिए हम दोहरा दें। बरगद के पेड़ के नीचे जब सत्यवान ने अपनी धर्मपत्नी सावित्री की गोद में सिर रखकर आखिरी साँस ली, तो यमराज स्वयं उसकी आत्मा को भूलोक से विदा कराने पधारे थे। मगर सावित्री भी कहाँ मानने वाली थीं! वे यमराज के पीछे-पीछे ही चल पड़ीं और अपनी गजब की वाकपटुता तथा चतुराई से पहले तो सौ पुत्रों की माता होने का वरदान माँग लिया और फिर एक पतिव्रता नारी का तर्क देकर यमराज को सत्यवान के प्राण लौटाने पर मजबूर कर दिया। फिर क्या था, हर पौराणिक कथा की तरह वे दोनों चिरकाल तक सुख-समृद्धि के साथ रहे। वैसे ठंडे दिमाग से सोचिए, क्या अद्भुत सामर्थ्य था उस महापतिव्रता नारी सावित्री में! क्या तपोबल और क्या तेज रहा होगा, जो यमराज के पाश से भी अपने पति को खींच लाई!

मगर ध्यान रहे... वह 'सत्ययुग' था और यह है 'कलियुग' भाई! आजकल की पत्नियाँ भी यमराज से पति के प्राण वापस माँग सकती हैं, पर इसलिए नहीं कि उन्हें जनम-जनम का साथ चाहिए। बल्कि इसलिए कि उनके जाने के बाद पतिदेव किसी और लोक में अकेले कैसे एश कर सकते हैं? वे स्वर्ग में अप्सराओं के नृत्य का सुख भोगें या नरक की वीआईपी व्यवस्था का आनंद लें और यहाँ यह 'बेचारी अबला' अकेले बैठकर आँसू बहाए?

और सबसे बड़ा संकट तो डिजिटल कलियुग का है! अगर पतिदेव ही ऊपर चले गए, तो इंस्टाग्राम के लिए साड़ी और गहने पहनकर रील्स बनाते समय बैकग्राउंड म्यूज़िक कौन बजाएगा? तरह-तरह के एंगल्स से कैमरे को हाथ में पकड़कर वीडियो कौन शूट करेगा? ना, कदापि नहीं! जो होगा, यहीं आमने-सामने होगा; दोनों यहीं रहेंगे और लड़ते-झगड़ते पूरा जीवन काटेंगे।

वैसे सावित्री वाले हादसे के बाद यमराज जी भी काफी स्मार्ट हो गए हैं। उस दिन के बाद से वे किसी पत्नी को दिखाई ही नहीं देते, बिल्कुल 'वर्क फ्रॉम होम' वाले स्टाइल में चुपके से प्राण लेकर नौ-दो-ग्यारह हो जाते हैं। आखिर भाई, अगर हर पत्नी सावित्री बन जाती, तो चित्रगुप्त जी के बही-खाते और यमराज के मंथली टारगेट्स का क्या होता? उनके इंसेंटिव पर तो पानी ही फिर जाता!

वैसे हमारा व्यक्तिगत मानना है कि नरक की आग, रसोई की इस गैस वाली आग से बहुत कम तपती होगी। बिना बीवी के तो नरक भी स्वर्ग जैसा ही शांतिप्रिय लगता होगा! वहाँ की सजाएँ कितनी सिंपल हैं—एक बार आग में भूना, एक बार उबलते तेल की कढ़ाई में डाला और कहानी खत्म! मगर शादीशुदा जिंदगी के इस कलियुगी 'लाइव डेमॉन्स्ट्रेशन' में तो रोज़ बिना तेल के भुनना और रोज़ धीमी आँच पर तलना पड़ता है!

खैर, बड़ी देर से ये सब पौराणिक घटनाक्रम देखते-देखते ऊब गए तो हमने टेलीविजन का चैनल बदल दिया। न्यूज़ चैनल चलाकर हम फिर मोबाइल में उलझ गए। मगर तभी एक तीखी मगर दमदार आवाज ने हमारा ध्यान



खींचा। "मेरे प्रिय देशवासियों, गैस बचाओ, देश बचाओ। भाइयो और बहनो देश संकट में है। हमें देश बचाना है!" प्रधानमंत्री की इस भावुक अपील को सुनकर हम भी देशभक्ति की भावना से ओत-प्रोत हो गए। सीधे रसोई की तरफ कदम बढ़े और बहती हुई गैस को धीमा कर दिया। फिर बड़े गर्व से सीना फुलाकर धर्मपत्नी की तरफ देखा। मगर वहाँ का नजारा बदला हुआ था। वह अपनी बड़ी-बड़ी आँखें और बड़ी करके, भुक्ति ताने किसी रुष्ट देवी की तरह हमें ही घूर रही थीं। उनके मुखमंडल के इस 'रौद्र रूप' को देखकर हमारे छप्पन इंची सीने की हवा फुर से निकल गई। हमने सहमते हुए पूछा—"देवी, आप इस तरह रुष्ट क्यों हैं?" हमारे इस मासूम सवाल पर उन्होंने दाँत पीसते हुए पूछा—"गैस क्यों धीमी कर दी?" हमने भी तुरंत प्रत्युत्तर दिया—"देश संकट में है भाग्यवान! प्रधानमंत्री जी ने गैस बचाने को कहा है।" इस पर तंज कसते हुए वह बोलीं—"पहले अपने सिर के बालों पर गहराया हुआ संकट तो हर लो, देश बाद में बचाना!" यह कहते हुए उन्होंने गैस फिर से तेज कर दी। हमने जैसे ही दोबारा हाथ बढ़ाया, उन्होंने हमारा हाथ झटकते हुए कहा—"अरे, जाओ यहाँ से, आए बड़े देशभक्त!"

हमने एक बार फिर से गैस धीमी करने की कोशिश की ही थी कि बेलन हमारी ओर लोकतांत्रिक मिसाइल की तरह बढ़ता दिखाई दिया... और उसी क्षण हमें समझ आ गया कि देश तो बाद में बचेगा, पहले हमें खुद को बचाना है!

उनके इस 'रौद्र रूप' और गुस्से को देखकर हमने रसोई से नौ-दो-ग्यारह हो जाने में ही भलाई समझी। हम दबे पाँव बाहर की तरफ आ ही रहे थे कि कानों में उनकी कड़कती आवाज़ पड़ी—"एक तो सुबह से ही इतनी देर हो गई है, ऊपर से ये मुसीबत! कब पूड़ियाँ छनेंगी और कब होगी बड़मावस की पूजा? वट सावित्री की कथा भी तो सुननी है। बड़े चले आए देश और गैस बचाने!"

रसोई से बाहर आते ही सहसा हमें याद आया कि आज तो सचमुच 'बड़मावस' है, यानी वट सावित्री की पूजा! यह वही पावन दिन है जब पत्नियों द्वारा पतियों के जीवन के अक्राउंट में 'छमाही लंबी उम्र का रिचार्ज' किया जाता है। अब आप सोचेंगे छमाही क्यों? अरे मानस के राजहंस! क्योंकि साल का दूसरा रिचार्ज तो करवा चौथ पर होता है न! आज भाग्यवान द्वारा हमारे ही दीर्घायु होने के धर्म की स्थापना हो रही थी और हम चले थे प्रधानमंत्री की बातों में आकर रसोई में 'धर्मचक्र परिवर्तन' करने! देश बचे न बचे, आज हमारी खैर नहीं थी। अपनी इस हिमालय जैसी भूल को स्वीकार करते हुए हमने होंठों को गोल घुमाया, एक लंबी ठंडी साँस छोड़ी और सोफे पर ढहते हुए बुदबुदाए—"उफ़्र! जान बची तो लाखों पाए, मियाँ जी वापस सोफे पर आए!"



“
मैं उन लोगों में से हूँ, जो चाहते हैं
और जिनका विचार है कि हिंदी
ही राष्ट्र भाषा हो सकती है

- बाल गंगाधर तिलक

अंकित भट्ट
लेखाकार



"पापा हम इस बार तो समर वेकेशन में अपने गाँव जाएंगे ना?" रोहित ने उम्मीद भरी नजरों से पूछा। धरमपाल जानता था कि देर-सवेर यह सवाल उसके सामने आने ही वाला था। काम से लौटने के बाद धरमपाल कभी-कभी रोहित और कुसुम को अपने गाँव बाड़खाल की कहानियाँ सुनाया करता था। इन्हीं कहानियों के बीच यह सवाल साल में दो-चार बार रोहित पूछ ही लेता था। "बेटा, मेरे बॉस मुझे इतनी लंबी छुट्टी नहीं देंगे और फिर तुम्हारी एक्स्ट्रा क्लास का क्या होगा?" हर बार की तरह इस बार भी धरमपाल ने अपने बेटे की बात को टाल दिया। बेटे के चेहरे पर मायूसी देख धरमपाल को तीस साल पहले अपने पिता की उसी स्थिति का एहसास होता था जब वो धरमपाल को एक खिलौना नहीं दिला पाए थे और उसने कई दिनों तक उनसे बात नहीं की थी।

साल 1981 की एक सुबह धरमपाल ने बाड़खाल छोड़ दिया। तब वह बाईस साल का था। उसने यह तय कर लिया था कि इस गाँव के पास उसे देने के लिए कुछ नहीं था और वह यहाँ कभी नहीं लौटेगा। उसने अपनी माँ का आशीर्वाद लिया, फिर एक नजर अपनी पत्नी कान्ता की ओर देखा और बस अपना लोहे का



सन्दूक उठाकर बड़े शहर 'दिल्ली' की बस पकड़ने के लिए निकल पड़ा। उन दिनों चीड़ के पेड़ों के सूखे पत्ते पूरी पगडंडी पर चादर की तरह बिछे हुए थे। रास्ता फिसलन भरा था तो धरमपाल संभल कर चल रहा था। रास्ते में उसने अपने बचपन के दोस्त दीपराज के घर की तरफ देखा। दीपराज दो साल पहले ही फौज में भर्ती हो गया था। उसके घर के आँगन को देखते हुए धरमपाल ने सोचा कि शायद अब कभी मुलाकात ना हो। पहाड़ी से उतरते हुए उसने अपने पिता, जो कि तीन साल पहले गुजर गए थे और खुद के संबंध के बारे में भी सोचा। धरमपाल अपने पिता से अधिकतर नाराज ही रहता था। लेकिन शायद उसने कभी खुद को उन्हें समझने का मौका ही नहीं दिया था।

दिल्ली ने बिना किसी लाग-लपेट के उसे निगल लिया। उत्तम नगर के एक कमरे में उसे तीन अन्य लड़कों के साथ सोने की एक जगह मिल गई, एक ऐसी जगह जहाँ से हमेशा सीलन भरी दीवारों और कमरे में आर-पार लगी रस्सी पर टंगे गीले कपड़ों की महक आती रहती थी। शुरुआती दिन उसके लिए अत्यधिक कठिन रहे। महीनों तक वह धूल भरी सड़कों पर एक कारखाने से दूसरे कारखाने काम की तलाश में भटकता रहता।

और जहाँ काम मिलता वहाँ तो पगार इतनी कम होती कि दो वक्त की रोटी भी मुश्किल से मिल पाती। धरमपाल बड़ी मेहनत से काम करता था और जरूरत पड़ने पर ज्यादा घंटे भी काम कर लेता था।

एक शाम धरमपाल के पड़ोसी श्यामलाल ने उसे फरीदाबाद के एक ताले के कारखाने के बारे में बताया। श्यामलाल साठ साल का था, किसी पुरानी अलमारी की तरह भारी-भरकम और उसने शहर की कई मेटल वर्कशॉप में काम किया था।

"विरासत लॉक्स," कमरे के बाहर चाय का गिलास हाथ में लिए श्यामलाल ने कहा "अच्छे लोग हैं, काम भी बढ़िया है। ऐसे ताले बनाते हैं

जो सालों-साल चलते हैं।"

"किस तरह के ताले, काका?" धरमपाल ने पूछा।

"वैसे ताले, जो तेरे दादा ने खरीदे होंगे" श्यामलाल ने कहा। "पीतल के, भारी वाले।" चाय का एक घूंट लेते हुए उसने कहा "और मैं बात कर लूँगा, काम भी अच्छा है और पगार भी यहाँ से ज्यादा ही मिलेगी।"

उस नवंबर, धरमपाल ने 'विरासत लॉक्स' की असेंबली लाइन में काम सीखना शुरू किया। शुरुआत में धरमपाल का काम बहुत साधारण था- कुंडी और स्प्रिंग जोड़ो, अलाइनमेंट चेक करो, दो बार सारी चाबियाँ घुमा कर देखो और आगे बढ़ा दो। शुरुआती हफ्तों में उसने भी बाकी सब की तरह गलतियाँ कीं। कभी कुंडी ठीक से नहीं बैठी, कभी स्प्रिंग ढीली रह गई। लेकिन दूसरों के उलट, उसने कभी अपनी गलती नहीं दोहराई। सुपरवाइजर, मेहता साहब उसके काम से बड़े खुश रहते थे।

धरमपाल को तालों का काम बहुत रास आया। मानो वह अपनी पूरी जिंदगी इसी काम की तलाश में था। वह ताले को हाथ में लेता, उसके वजन को महसूस करता, उसमें चाबी लगाता और घुमाता। ताले के खुलने और बंद होने की बस एक आवाज सुनकर ही वह बता देता कि ताला पास होगा या फ़ेला। ज्यादातर मौकों पर वह सही ही साबित होता था। उसके इस अनोखे हुनर ने उसे कारखाने में 'उस्ताद' का दर्जा दिला दिया। कुछ ही साल में उस्ताद का काम ऐसा हो गया कि कारखाने की उस दुनिया में वह एक किंवदंती सा बन गया। "धरमपाल को दिखा लो," लोग तब कहते जब भी किसी खेप में कुछ कमी होती।

भागलपुर के उसके साथी रमेश को धरमपाल की ये कला बड़ी मजेदार लगती थी। "उस्ताद तुम तालों से बात करते हो क्या?" उसने धरमपाल की खेप से एक ताला उठाते हुए पूछा। "ये ताले तुमको सब कुछ इतनी जल्दी कईसे बतियाते हैं? हम तो सुने हैं कि तुम पहाड़ी लोग जादू टोना भी जानते हो। लगता है सब उहे का कमाल है।"

धरमपाल उसकी बात पर हमेशा की तरह बस हँस दिया और अपने काम को विराम देते हुए दोपहर के खाने के लिए उसके साथ कैन्टीन की तरफ चल पड़ा।

अब धरमपाल अपने खुद के किराये के घर में रहने लगा था। इसी बीच उसने अपनी पत्नी कांता को भी दिल्ली बुला लिया। धरमपाल ने कई बार अपनी माँ से भी दिल्ली आने की विनती की लेकिन उनका मन यह नहीं मान सकता था कि वो अपने घर से दूर कभी रह भी सकती हैं।

धरमपाल, उसकी पत्नी और उनके दोनों बच्चे रोहित और कुसुम एक साधारण और मध्यम वर्गीय जीवन जी रहे थे। धरमपाल ने बच्चों का दाखिला एक अच्छे स्कूल में कराया था। हर शाम काम से लौटकर वह उनके साथ जमीन पर बैठ जाता और उन्हें कहानियाँ सुनाता था। गंभीर काका की बंदरों वाली कहानी से लेकर दादी की गुलदार से भिड़ने तक की कहानियाँ, धरमपाल ने उन्हें बाइबल के बारे में इतना तो बता ही दिया था कि उन्होंने गाँव का एक सजीव चित्रण अपने मन में कर लिया था।

"पापा, हम बाइबल कब जा रहे हैं? इस गर्मियों की छुट्टियों में?" हर बार की तरह यह सवाल रोहित ने फिर पूछ लिया।

धरमपाल उस वक्त एक अलग तरह की खामोशी में डूब जाता। फिर वह थोड़ा मुस्कराता, जैसे कोई ईसान महज मुस्कुराने का नाटक कर रहा हो।

"अगले साल, बेटा। इस साल सही समय नहीं है।"

"आपने पिछले साल भी यही कहा था।"

"इस साल मैं सच कह रहा हूँ।"

बच्चे एक दिन मुँह फुलाते, फिर भूल जाते और अगली गर्मियों में फिर से वही सवाल पूछते। हर गर्मी की छुट्टी वे फरीदाबाद में ही बिताते। धरमपाल खुद को तसल्ली देता कि यह सब पैसों की वजह से है, सफर का खर्च, छुट्टी लेना, पुराने घर की मरम्मत और भी बहुत कुछ। यह सब सच भी था। पर यह पूरा सच नहीं था। तेरह साल पहले उसकी ली हुई कसम आज भी उसके बच्चों की जिद पे भारी पड़ जाती थी।

कुछ साल और इसी तरह बीत गए। अंततः अब अधिकतर बीमार रहने और शरीर से कमजोर हो चुकी माँ को धरमपाल ने दिल्ली आने के लिए मना ही लिया। वह उस वक़्त साठ साल की थी लेकिन गाँव में अकेलेपन और अस्वस्थ होने के कारण काफी कमजोर दिखाई पड़ती। वह सिर्फ़ एक बैग लेकर आई थीं। यह पल उन सभी के लिए बड़ा सुखद था। धरमपाल उन्नीस साल बाद अपनी माँ से मिला था। धरमपाल की माँ भी अपने बेटे, बहू और पोतों से मिलकर बड़ी खुश हुई। हालाँकि वह खुद को बड़ा अभागा मानती थी कि उसे अपने पंद्रह साल के पोते और बारह साल की पोती से मिलने में इतना समय लगा।

बच्चों को दादी का साथ खूब भाया मानो कि वे अपना बचपन दोबारा जी रहे थे। लेकिन दादी के लिए शहर का जीवन चुनौती भरा था। वो ज्यादातर समय घर के अंदर ही गुजारती थीं। हालाँकि वो कभी-कभी कुसुम के साथ पास के चौराहे तक चली जाती थी लेकिन रास्ते पे दौड़ती गाड़ियों से, जिन्हें वो 'लोहे की गाय-भैंस' बुलाती थीं, उन्हें बड़ा डर लगता था। घर पर भी टेलीविजन पर भजन सुनने से उनकी शाम कट जाती। कभी-कभी वो भी धरमपाल से गाँव वापिस जाने की एक विनती करती। लेकिन बच्चों की तरह अब वो माँ को भी टालने में नहीं कतराता था। हर बार उसके दिल को एक टीस जरूर पहुँचती थी लेकिन उस पल पैंतालीस साल का धरमपाल नहीं, वही पाँच साल का जिंदी लड़का बोल रहा होता था।

धरमपाल ने अपनी माँ की सेवा में कोई कमी नहीं छोड़ी थी। एक शाम धरमपाल अपनी माँ के पैरों की मालिश करते हुए टेलीविजन पर समाचार देख रहा था। आम चुनावों के रज़ानों को वो इतने गौर से सुन रहा था कि उसने अपनी माँ की बात को पहली बार में सुना भी नहीं। इस बार माँ ने उसका हाथ पकड़कर, बेहद कोमलता लेकिन स्पष्टता के साथ कहा, "मुझे बाइखाल वापस ले चल, बेटा। मुझे अपने घर जाना है।"

"जल्दी ही, माँ।"

"तू कई सालों से 'जल्दी' ही कह रहा है। अब तो कुसुम भी 12वीं पास हो गई है।"

"उसका अभी किसी कॉलेज में दाखिला भी तो करवाना है और कारखाने में भी छुट्टी मिलना बड़ा मुश्किल हो गया है।"

धरमपाल इस बार भी टालने की पूरी कोशिश कर रहा था लेकिन अब शायद वो भी जानता था कि उन्हें ज्यादा दिन तक रोक नहीं पाएगा। फिर इससे पहले कि वो कुछ और बोलता, माँ ही बोल उठी - "अगर तू मुझे अभी नहीं ले गया, तो मैं इस शहर में ही मर जाऊँगी।" धरमपाल की माँ कड़े शब्दों में बोली।

"यहाँ मेरा है ही कौन ? इतने सालों में किसी पड़ोसी को भी नहीं जान पाई हूँ। यहाँ तो मैं इस कमरे में घुट-घुट के ही मर जाऊँगी।"

धरमपाल के पास इस बार कोई जवाब नहीं था। वो इस बार मना भी नहीं कर पाया। उसने कुछ भी नहीं कहा और बस चुपचाप अपना बटुआ उठा के घर से बाहर चल दिया। रोज की तरह वो शाक सब्जी लेने पास की मंडी चला गया। आज उसने ज्यादा मोल भाव नहीं किया। बस थोड़ा बहुत सामान लेकर घर को वापिस चल दिया। पूरे रास्ते आज उसके मन में अपनी माँ को वो शब्द गूँज रहे थे।

धरमपाल की माँ रात का खाना जल्दी खा लिया करती थी। उस दिन भी वो खाना खाकर अपने बिस्तर पर लेट गई थी। धरमपाल, उसकी पत्नी और कुसुम रात का खाना साथ में ही खाते थे। रात के खाने पर धरमपाल ने अपनी पत्नी और कुसुम से कहा "मैं सोच रहा हूँ कि अगले हफ्ते माँ को घर लेकर चला जाऊँ। तुम भी चलोगे क्या?" ये सुनते ही कान्ता और कुसुम आश्चर्यचकित हो गए। कान्ता जिसे इस जन्म तो गाँव जाने की उम्मीद ही नहीं थी और कुसुम जिसका इरादा बड़े होके खुद से गाँव जाने का था, आखिर इतना बड़ा बदलाव देखकर क्यों न अचंभित होते?

"हाँ बिल्कुल" कुसुम पूरी उत्सुकता से बोली। "मैं रोहित भैया को भी बुला लूँगी, वो अगले हफ्ते की छुट्टी लेके आ जाएंगे कॉलेज से।"

"ठीक है फिर।" कहते हुए धरमपाल वापस खाना खाने लगा। वो खुद को बड़ा हल्का महसूस कर रहा था, मानो कि कोई बोझ उसके शरीर से उतर गया हो।

उस हफ्ते, धरमपाल ने दो हफ्ते की छुट्टी की अर्ज़ी दी जो कि बड़ी आसानी से मंजूर भी हो गई।

वो सभी अगली सुबह बाइखाल के लिए निकल पड़े। वहाँ पहुँचने में कुल बारह घंटे लगे। रास्ते में धरमपाल ने दो तीन जगह गाड़ी रोकी, कहीं चाय के लिए तो कहीं नाश्ते के लिए। धरमपाल की माँ को गाड़ी में बैठना ज्यादा पसंद नहीं था। बारह घंटे का ये सफर तो शायद उन्होंने अपनी आँखों के सामने उभरती अपने घर की तस्वीर के सहारे ही काटा होगा। शाम होने को थी और गाड़ी का रास्ता अब खत्म हो चुका था। अगला पड़ाव उन्हें पैदल ही चलना था। धरमपाल ने गाड़ी से सारा सामान निकाला और फिर गाड़ी पर कवर चढ़ा कर उन्होंने अपनी पैदल यात्रा शुरू की।

आज जंगल हरे भरे थे। रास्ता एकदम साफ था। रास्ते के किनारे फूल यूँ खिले थे कि वे मानो धरमपाल की वापसी के जश्न में लगाए गए हों। उम्र के इस पड़ाव में यह रास्ता बड़ा कठिन मालूम होता था। जिस रास्ते पर बचपन में बिना थके बिना रुके वो यूँ ही चढ़ जाया करते थे, आज कुछ सौ कदम पर उसे भी साँस समेटने के लिए रुकना पड़ता। सूरज अब लगभग ढलने को था। जंगल की ठंडी हवा और अपने घर पहुँचने की खुशी से मिलती ऊर्जा से वे अब गाँव में प्रवेश कर चुके थे। धरमपाल की सारी यादें ताज़ा हो गईं। वो दीपराज के घर की तरफ देख कर

मुस्कराया। वो नहीं जानता था कि दीपराज अब कहाँ है। लेकिन उसे तो बस उस आँगन में दो बच्चे खेलते हुए दिखाई पड़ रहे थे।

धरमपाल की माँ सफर से बुरी तरह थक चुकी थीं, घर के आँगन में ले जाने वाली पुरानी पत्थर की सीढ़ियों पर उन्होंने काफी संघर्ष किया। सीढ़ियों पर अब तिरछी दरार आ चुकी थी। "सीढ़ियों को ठीक कराना" धरमपाल ने रास्ते भर अपने मन ही मन में बनाई हुई घर पर मरम्मत और नए कामों की सूची में एक और काम जोड़ लिया था।



एक तरफ को क्षितिज हल्का नारंगी सा दिखाई पड़ता, चोटी पर खड़े पेड़ उस आखिरी रोशनी को अपने अंदर समेट रहे थे, नीचे पहाड़ी पर कहीं कोई कुत्ता भौंक रहा था, गाँव के कुछ घरों से शाम के चूल्हे का धुआँ उठने लगा था। इस हवा में आज उन कहानियों की महक थी जो वह फरीदाबाद के एक कमरे की ज़मीन पर बैठकर अपने बच्चों को सुनाया करता था।

धरमपाल ने अपना बैग पत्थर के आँगन पर रखा जहाँ पर रखरखाव ना होने की वजह से उनके बीच घास उग चुकी थी। उसने गहरी साँस ली। और घर के दरवाजे की तरफ बढ़ने लगा।

दरवाजे पर पीतल का एक भारी ताला लटक रहा था। ताले को देख उसके भीतर सब कुछ उस पल थम सा गया। उसने ताले को अपने हाथ में लिया जिसपर उभरे हुए साफ शब्दों में लिखा था-

'विरासत'

'सिन्स 1967'

पहली बार किसी ताले ने उसे निरुत्तर कर दिया था।

उसने अपनी सारी ज़िंदगी यही ताले बनाते हुए गुजारी थी। उसने ऐसे हज़ारों ताले अपने हाथों में थामे थे। वह महज़ एक पल में ताले का वजन, उसकी आवाज़ और स्प्रिंग की छुआन से बता सकता था कि वो अच्छा है या बुरा। वर्षों से ताले छूते-छूते उसके हाथ किसी कारीगर के हाथ नहीं बल्कि तराजू बन गए थे।

उसकी आवाज़ जैसे कहीं खो गई थी। आज कोई स्प्रिंग, कोई आवाज़ जाँचने की ज़रूरत नहीं थी। आज यह ताला पास या फ़ेल होने के लिए नहीं था। उसकी आँखों में पानी भर आया था। आज पहली बार 'विरासत' का ताला न सिर्फ उसके हाथों को बल्कि उसके मन को भी भारी महसूस हो रहा था।



जब छोड़ा था शहर अपना,
आँखों में कई ख्वाब सजाए थे...
स्टेशन पर अलविदा कहने,
सभी अपने आए थे...
सफर हुआ शुरू...
राहों में कुछ सपने रूठने लगे,
दुनियादारी में कुछ अफसाने टूटने लगे,
कुछ अपने हमसे छूटने लगे...
अब जब लौटता हूँ...
स्टेशन पर अलविदा कहने,
कुछ कम लोग आते हैं...
यथार्थ की धूप ऐसी पड़ी,
आँखों की नमी जमी...
उम्मीदों की लौ भी थमी...
कुछ ख्वाब धुएँ में भटक गए,
कुछ अपने हमसे छिटक गए...
यथार्थ से लड़ते-जूझते,
सारे सपने टूट गए,
सारे अपने हमसे छूट गए...
अब जब लौटता हूँ...
तन्हा होता हूँ...
तो सोचता हूँ—
क्यों ही हमने सपने सजाए थे...?
क्यों स्टेशन पर अलविदा कहने,
सभी अपने आए थे...?
अब उसी स्टेशन पर...
धुआँ है, बेचैनी है, शोर है...
इरादों में मगर अभी भी जोर है...
और इसके साथ सिर्फ मैं हूँ...
सिर्फ मैं ही हूँ...





जयदीप
लेखाकार

एक गाँव में एक डाकिया रहता था। गाँव की धूल भरी पगडंडियों से लेकर शहर की तपती गलियों तक, जब दोपहर की धूप अपने पूरे तेज पर होती थी, तब दूर से साइकिल की एक परिचित घंटी सुनाई देती—“टिन-टिन”। यह आवाज़ थी जुगराज की, जो पिछले तीस वर्षों से डाक विभाग में अपनी सेवाएँ दे रहे थे। खाकी वर्दी, कंधे पर चमड़े का भारी झोला और चेहरे पर कर्तव्यनिष्ठा की चमक—यही उनकी पहचान थी। जुगराज का घर गाँव में था, लेकिन उनका कर्मक्षेत्र शहर की वे तंग गलियाँ थीं जहाँ वे प्रतिदिन मीलों साइकिल चलाकर लोगों तक खुशियाँ, उम्मीदें और जीवन बदल देने वाली खबरें पहुँचाते थे।

सीमित वेतन और बड़े परिवार की जिम्मेदारियों के बीच जीवन आसान नहीं था। फिर भी जुगराज और उनकी पत्नी ननकी ने कभी परिस्थितियों के आगे हार नहीं मानी। दोनों ने अपने बच्चों की शिक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। कई बार उन्होंने अपनी आवश्यकताओं का त्याग किया, लेकिन बच्चों की पढ़ाई में कोई कमी नहीं आने दी। कभी-कभी उनकी पत्नी भविष्य को लेकर चिंतित रहती कि हम लोगों ने आगे के लिए कोई भी बचत नहीं की है लेकिन जुगराज अपने बच्चों की तरफ इशारा करते हुए ननकी से कहते कि अपनी बचत तो अपने ये पढ़े-लिखे बच्चे होंगे। जुगराज ने वर्षों तक अपने लिए नए कपड़े या जूते नहीं खरीदे; उनके लिए सबसे बड़ा सुख बच्चों की फीस समय पर जमा कर देना था। एक दिन डाक वितरण के दौरान एक उग्र कुत्ते ने उनके पैर पर हमला कर दिया। घाव इतना गहरा था कि खून रुकने का नाम नहीं ले रहा था। डॉक्टर ने उन्हें दस दिनों के पूर्ण विश्राम की सलाह दी, लेकिन अगले ही दिन जुगराज ने पट्टी पर मोटा कपड़ा बाँधा और लंगड़ाते हुए अपनी साइकिल लेकर निकल पड़े। उनके झोले में कुछ युवाओं के नियुक्ति-पत्र थे। वे जानते थे कि उन पत्रों में किसी परिवार का भविष्य छिपा है। दर्द से कराहते हुए भी उन्होंने अपना कर्तव्य निभाया।



समय बीतता गया, लेकिन जीवन की सबसे कठिन परीक्षा अभी बाकी थी। सेवाकाल के अंतिम वर्षों में विभाग के भीतर लगे एक गलत आरोप के कारण जुगराज एक कानूनी विवाद में फँस गए। यह आरोप उनकी ईमानदारी और आत्मसम्मान पर गहरा आघात था। सेवानिवृत्ति के बाद भी मामला समाप्त नहीं हुआ। उनकी पेंशन और अन्य देय राशि रोक दी गई। न्याय पाने के लिए वे वर्षों तक अदालतों के चक्कर लगाते रहे, परंतु उन्हें राहत नहीं मिली। इन संघर्षों की साक्षी उनकी सबसे छोटी बेटी थी। उसने बचपन से अपने पिता को अपमान, आर्थिक कठिनाइयों और न्याय की प्रतीक्षा में टूटते हुए देखा था। एक दिन उसने अपने पिता के चरण स्पर्श कर दृढ़ स्वर में कहा—“पिताजी, मैं वकील बनूँगी और आपका मुकदमा स्वयं लड़ूँगी।” जब तक आपको निर्दोष सिद्ध कर आपका सम्मान और अधिकार वापस नहीं दिला देती, तब तक शादी-वादी नहीं करूँगी।” उसके इस निर्णय ने पूरे परिवार को भावुक कर दिया। माता-पिता ने उसे समझाने का प्रयास किया, समाज और रिश्तेदारों ने भी दबाव बनाया, लेकिन वह अपने संकल्प से पीछे नहीं हटी। उसके लिए पिता का सम्मान किसी भी व्यक्तिगत सुख से बड़ा था।

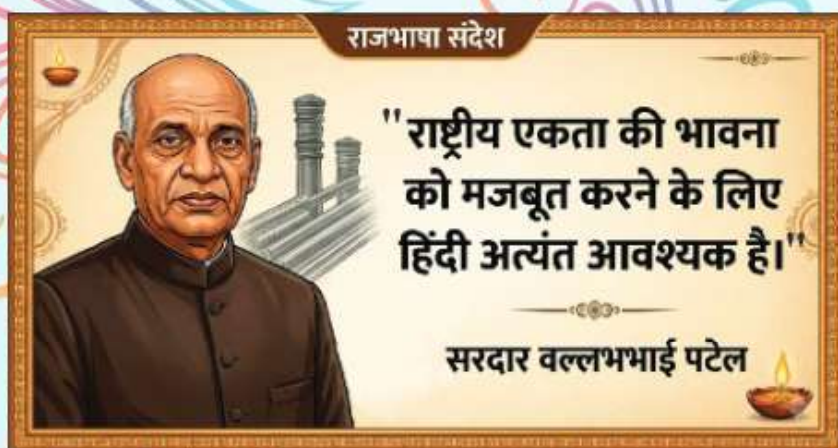
वर्षों की कठिन पढ़ाई और अथक परिश्रम के बाद वह दिन भी आया जब वह काली वर्दी पहनकर अदालत में अपने पिता की ओर से खड़ी थी। उसने तथ्य, दस्तावेज और प्रमाणों के माध्यम से न्यायालय के समक्ष जुगराज की तीन दशकों की निष्कलंक सेवा का विवरण प्रस्तुत किया। उसने बताया कि कैसे एक ईमानदार कर्मचारी को परिस्थितियों का सामना करना पड़ा, फिर भी उसने कभी अपने कर्तव्य से समझौता नहीं किया।

अंततः सत्य की विजय हुई। न्यायालय ने जुगराज को ससम्मान दोषमुक्त घोषित किया और उनकी रुकी हुई पेंशन तथा अन्य देय राशियाँ ब्याज सहित प्रदान करने का आदेश दिया। निर्णय सुनते ही अदालत कक्ष में भावनाओं का सैलाब उमड़ पड़ा। बाहर निकलकर बेटी ने अपना काला कोट पिता के चरणों में रख दिया। जुगराज की आँखों से आँसू बह निकले—ये आँसू पीड़ा के नहीं, बल्कि गर्व, सम्मान और संतोष के थे। आज उनका बड़ा बेटा एक सरकारी विद्यालय में शिक्षक है, बड़ी बेटी एक सफल अधिवक्ता है और अन्य बच्चे भी अपने-अपने क्षेत्रों में प्रतिष्ठित हैं। जुगराज और ननकी के लिए यही उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि है।



मुकदमे में विजय के बाद जुगराज ने स्वयं अपनी छोटी बेटी का विवाह तय किया। पूरे गाँव ने उस अवसर को उत्सव की तरह मनाया। आज वे दोनों अपने गाँव के घर में सम्मान और शांति के साथ जीवन व्यतीत कर रहे हैं। जुगराज के पैर का पुराना घाव और धूप से साँवला पड़ा चेहरा आज भी उनके संघर्ष, त्याग और कर्तव्यनिष्ठा की गवाही देता है। आज भी जब कोई डाकिया गाँव की गलियों से गुजरता है, तो जुगराज उसे विशेष सम्मान की दृष्टि से देखते हैं। वे जानते हैं कि उस खाकी वर्दी के पीछे केवल एक कर्मचारी नहीं, बल्कि अनगिनत जिम्मेदारियों, सपनों और त्याग की कहानी छिपी होती है।

सच है कि धैर्य, ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा का प्रतिफल देर से सही, लेकिन अवश्य मिलता है। साथ ही, एक समर्पित संतान अपने माता-पिता के सम्मान और अधिकारों की रक्षा के लिए किसी भी सीमा तक जा सकती है।



सौम्य पर दृढ़: संवाद का आध्यात्मिक सेतु



डॉ० दिनेश शर्मा
सहायक लेखाधिकारी

आज का आधुनिक समाज एक अजीब से उद्वेग, मानसिक उथल-पुथल और आत्मघाती उतावलेपन के दौर से गुजर रहा है। लोग पूरी बात सुनने, समझने और किसी तीसरे निष्पक्ष पक्ष या परामर्शक के दृष्टिकोण को आत्मसात करने से पहले ही अपना अंतिम और कठोर फैसला सुनाने को आतुर रहते हैं। निष्कर्ष पर पहुँचने की इसी भयावह जल्दी के कारण दशकों पुराने और गहरे रिश्ते पल भर में ताश के पत्तों की तरह बिखर रहे हैं। यह स्थिति व्यक्तिगत जीवन को तो तबाह कर ही रही है, साथ ही हमारी पूरी सामाजिक व्यवस्था और उसके ताने-बाने को भीतर से खोखला कर रही है।

इस बिखरते सामाजिक ढाँचे को थामने और वैचारिक मतभेदों को सुलझाने का रास्ता कभी भी आक्रामकता, उग्रता या चिल्लाहट से नहीं निकल सकता। इसका एकमात्र हल "शांति से समाधान, संवाद से समाधान, सौम्यता से समाधान" के त्रिसूत्रीय मार्ग में निहित है। दुनिया के तमाम धर्मग्रंथ, समाजशास्त्री और मनोवैज्ञानिक सदियों से हमें यही सिखाते आ रहे हैं कि अपनी बात की दृढ़ता को अभिव्यक्त करने के लिए आक्रामक या हिंसक होने की रत्ती भर भी आवश्यकता नहीं है, असल और स्थायी शक्ति तो हमेशा सौम्य रहकर अपने सही स्टैंड पर अडिग रहने में ही होती है।

ऐसे में 'सौम्य पर दृढ़' (Polite but firm) होना कोई आधुनिक कॉर्पोरेट मैनेजमेंट थ्योरी या महज बातचीत की कोई नई तकनीक नहीं है, यह हमारे इतिहास, अध्यात्म, मनोविज्ञान और समाज की जटिल संरचना का शाश्वत निचोड़ है। चाहे गृहस्थ जीवन की छोटी-छोटी कड़वाहटें हों, सामाजिक जीवन के बड़े-बड़े मतभेद हों या किसी संगठन की जटिल कार्यप्रणाली में असहमति, हर जगह मंतव्य की दृढ़ता वाणी में सौम्यता के साथ ही स्वागतेय हो सकती है।



आज के बिखरते रिश्तों को समझने के लिए हमें आधुनिक मानव के मनोविज्ञान (Psychology) और समाज के बदलते स्वरूप की गहरी परतों को टटोलना

होगा। प्रसिद्ध अमेरिकी मनोवैज्ञानिक डैनियल गोलमैन का 'भावात्मक बुद्धिमत्ता और प्रमस्तिष्कखण्ड अपहरण' (Emotional Intelligence and Amygdala Hijack) का सिद्धांत यहाँ पूरी तरह सटीक बैठता है। गोलमैन के अनुसार, जब किसी रिश्ते में तनाव या टकराव होता है, तो मनुष्य का तार्किक मस्तिष्क काम करना बंद कर देता है और आदिम 'अमिगडाला' हावी हो जाता है, जिससे व्यक्ति 'लड़ो या भागो' की स्थिति में आकर तुरंत और आक्रामक फैसले लेता है। अमेरिकी मनोवैज्ञानिक मार्शल रोजेनबर्ग के 'अहिंसक संवाद' (Nonviolent Communication - NVC) सिद्धांत के अनुसार - "जब हम अपनी बात को बिना किसी पर आरोप लगाए या बिना उकसावे के, पूरी स्पष्टता और सौम्यता से व्यक्त करते हैं, तो सामने वाले का रक्षात्मक रवैया स्वतः ही शांत हो जाता है और संवाद का रास्ता खुलता है।"

इसी तरह महान फ्रांसीसी समाजशास्त्री एमिल दुर्खीम का 'विसंगति एवं सामाजिक सामंजस्य' (Anomie and Social Cohesion) का सिद्धांत आज की स्थिति को पूरी तरह व्याख्यापित करता है। दुर्खीम के अनुसार, जब समाज में पारंपरिक नियम और सामूहिक संबंध कमजोर होने लगते हैं तो व्यक्ति अकेलापन महसूस करता है, जिससे रिश्तों में ठहराव की कमी हो जाती है और वे जल्दी बिखरने लगते हैं।

उधर अमेरिकी समाजशास्त्री चार्ल्स हॉर्टन कूले का 'लुकिंग-ग्लास सेल्फ' (Looking-Glass Self) का सिद्धांत कहता है कि हमारा आत्म-बोध इस बात से तय होता है कि दूसरे हमारे बारे में क्या सोचते हैं। आज के आत्मकेंद्रित दौर में जब लोग संवाद का धैर्य खो देते हैं, तो वे सामने वाले के दृष्टिकोण का दर्पण देखना ही बंद कर देते हैं, जिससे पूरा सामाजिक ढांचा चरमरा जाता है।

दरअसल मनुष्य का यह उतावलापन, आक्रामकता और अधीरता उसके भीतर चल रहे विचारों के द्वंद्व और अनियंत्रित मन की ही देन है। जब अंतर्मन में धीरज और शांति का अभाव होता है, तो उसकी सीधी अभिव्यक्ति हमारी दूषित वाणी



और हिंसक व्यवहार में दिखाई देती है। वैश्विक स्तर पर सभी आस्थाओं के धर्मग्रंथों में इस स्थिति पर विस्तृत चर्चा मिलती है और समस्या के समाधान के लिए आध्यात्मिक और दार्शनिक दृष्टिकोण प्राप्त होता है।

श्रीमद्भगवद्गीता में मानसिक अशांति और चंचलता को भांपते हुए अर्जुन भगवान कृष्ण के सामने अपनी विवशता प्रकट करते हैं- "चंचलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद् दृढम्, तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम्" यानी यह मन बड़ा चंचल, प्रमथन स्वभाव वाला, अत्यंत दृढ़ और बहुत बलवान है, जिसे वश में करना हवा को रोकने के समान अत्यंत कठिन है। भगवान कृष्ण इस के उत्तर में अभ्यास और वैराग्य की सलाह देते हैं, जो वास्तव में आधुनिक मनोविज्ञान के भावनात्मक नियंत्रण का ही आध्यात्मिक रूप है। गीता हमें सिखाती है कि इस आंतरिक उद्वेग को थामकर ही हम 'सौम्य पर दृढ़' होने का पहला कदम उठा सकते हैं। सौम्य होने का वास्तविक अर्थ है कि आप अपनी बात को बिना किसी व्यक्तिगत कड़वाहट, क्रोध या अहंकार के, पूरी मर्यादा और स्पष्टता के साथ सामने रखें।

आज के दौर में जो अपनी ही बात को परम सत्य मानकर निष्कर्ष पर पहुँचने की आत्मघाती जल्दी दिखाई देती है, जैन दर्शन का 'अनेकांतवाद' उसका सबसे अच्छा इलाज है। "अनेगंतवादो सम्मत्तं" यानी अनेकांतवाद ही सही और संतुलित दृष्टिकोण है। यह सिद्धांत समाजशास्त्रीय रूप से यह स्थापित करता है कि किसी भी परिस्थिति या विवाद के कई पहलू हो सकते हैं। जब हम इस सोच को अपना लेते हैं, तो हमारी ऑरेटरी से उकसावा, जिद और अहंकार अपने आप समाप्त हो जाते हैं। इसके साथ ही, जैन आचार शास्त्र में 'सूनुत' वाणी का मनोवैज्ञानिक नियम बताया गया है, जो हित यानी भला करने वाली, मित यानी नापी-तुली और प्रिय यानी सौम्य हो। जब जीवन में मतभेद इतने बढ़ जाएं कि रिश्ते टूटने की कगार पर आ जाएं, तो जैन धर्म का यह सूत्र बिखरते रिश्तों को जोड़ने का अंतिम संबल बनता है कि "खामेमि सव्व जीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे, मित्ति मे सव्व भूएसु, वेरं मज्झं न केणई" यानी मैं संसार के सभी जीवों को क्षमा करता हूँ और संसार के सभी जीव मेरे प्रति अपने मन में क्षमा भाव रखें। मेरी सब जीवों के साथ मित्रता है और मेरा किसी के साथ भी कोई कड़वाहट या वैर-भाव नहीं है।

पूरी तरह से मन की शांति और करुणा के अध्यात्म पर केंद्रित बौद्ध दर्शन में स्पष्ट रूप से समझाया गया है कि उग्रता कभी भी उग्रता को शांत नहीं कर सकती; यह आग में घी डालने जैसा है। यदि समाज या परिवार में कोई व्यक्ति आपके सामने आक्रामक रुख अपना रहा है, तो आपकी असली दृढ़ता आपकी सौम्यता में प्रकट होनी चाहिए। धम्मपद का सूत्र कहता है कि "न हि वेरेन वेरानि सम्मन्तीध कुदाचनं, अवरेन च सम्मन्ति एस धम्मो सनन्तनो" यानी इस संसार में वैर से वैर कभी भी शांत नहीं होता, वैर तो हमेशा अवैर यानी प्रेम, करुणा और सौम्यता से ही शांत होता है। यही शाश्वत नियम है। मनोवैज्ञानिक रूप से भी, जब आप किसी के गुस्से का जवाब पूरी शांति और सौम्यता से देते हैं, तो सामने वाले का आक्रामक व्यवहार अपनी प्रासंगिकता खो देता है और वह शांत होने पर मजबूर हो जाता है। बिना किसी उकसावे के, बेहद शांति से संवाद की खिड़की को खुला रखना ही रिश्तों को दीर्घायु बनाता है।

पवित्र बाइबिल के 'नीतिवचन' में वाणी की मधुरता और बिना उग्र हुए अपनी बात पर मजबूती से टिके रहने की कला को बहुत ही सुंदर सामाजिक संदर्भ में समझाया गया है कि "कोमल उत्तर सुनने से क्रोध ठंडा हो जाता है परन्तु कटुवचन से क्रोध और भड़क उठता है।" यह पूरी तरह से एक व्यावहारिक मनोवैज्ञानिक सत्य है। जब दो लोगों के बीच विवाद चल रहा हो और एक पक्ष सौम्यता से स्पष्ट उत्तर दे, तो विवाद आगे बढ़ने से रुक जाता है। रिश्तों को जल्दबाजी में न तोड़ने और सामाजिक ढांचे को बचाने के लिए भी बाइबिल में सलाह दी गई है "सब प्रकार की नम्रता और कोमलता सहित और धीरज धरकर प्रेम से एक दूसरे की सह लो और मेल के बन्ध में आत्मा की एकता रखने का

यत्न करो।" यहाँ नम्र होने का अर्थ खुद को लाचार बनाना नहीं, उस आंतरिक शक्ति का प्रदर्शन है, जहाँ आप रिश्ते की गरिमा और सामाजिक एकता को बचाए रखने के लिए अपनी बात को बिना चीखे-चिल्लाए एक बेहद सौम्य लेकिन अकाट्य तरीके से प्रस्तुत करते हैं।

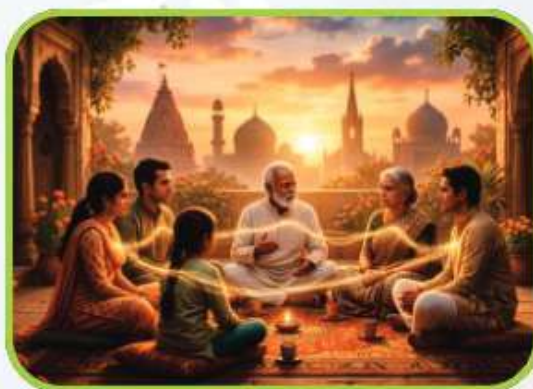
इस्लाम के पवित्र कुरान में भी इस बात की विशेष हिदायत दी गई है कि जब भी समाज में कोई वैचारिक मतभेद या विवाद उत्पन्न हो तो उसका समाधान खोजने के लिए अपनाई गई भाषा कभी भी उकसाने वाली नहीं होनी चाहिए। सामाजिक सद्भाव को बनाए रखने के लिए कुरान का स्पष्ट आदेश है कि "और लोगों से भली बात कहो।" एक अन्य आयत में 'सौम्य पर दृढ़' इस दृष्टिकोण के मनोवैज्ञानिक और सामाजिक चमत्कार को बहुत ही खूबसूरती से रेखांकित किया गया है –

"और भलाई और बुराई समान नहीं हो सकती। तुम बुराई का ऐसे तरीके से जवाब दो जो सबसे अच्छा और गरिमापूर्ण हो यानी सौम्यता से। फिर तुम देखोगे कि जिसके और तुम्हारे बीच गहरी दुश्मनी थी, वह तुम्हारा गहरा और पक्का दोस्त बन गया है।" यह आयत सीधे तौर पर इस बात की तस्दीक करती है कि अपनी बात को अभिव्यक्त करने का तरीका सौम्य और गैर-उकसावे वाला हो, तो वह बड़े से बड़े विरोधी हृदय को भी परिवर्तित कर सकता है।

खालसा पन्थ भी मीठी वाणी और आंतरिक धीरज का आध्यात्मिक संतुलन बनाने की बात पूरी प्रखरता से कहता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में धीरज को एक महान आध्यात्मिक गुण और कड़वा न बोलने को सामाजिक प्रगति का मूल आधार माना गया है। सिख दर्शन के अनुसार, जब कोई व्यक्ति अपनी वाणी की मधुरता खो देता है, तो वह मानसिक रूप से रुग्ण हो जाता है और अपनी इस अशांति से पूरे सामाजिक परिवेश को दूषित करता है। गुरु नानक देव जी कहते हैं कि कड़वे और उग्र बोल अंततः रिश्तों को और स्वयं के अस्तित्व दोनों को नुकसान पहुँचाते हैं - "नानक फीकै बोलियै तनु मनु फीका होइ, फीको फीका सदियै फीके फीकी सोइ।" यानी रूखे, कड़वे और उग्र बोल बोलने से मनुष्य का अपना तन और मन दोनों अशांत और कड़वाहट से भरे हो जाते हैं। ऐसा कड़वा बोलने वाले व्यक्ति को समाज में भी केवल तिरस्कार ही मिलता है और उसके सभी आत्मीय रिश्ते बिखर जाते हैं। सिख धर्म हमें यह सिखाता है कि विपरीत से विपरीत परिस्थितियों में भी मन के भीतर धीरज का आध्यात्मिक संतुलन बनाए रखना चाहिए और सौम्यता से बातचीत के रास्ते को कभी बंद नहीं करना चाहिए।

यदि हम इन तमाम वैश्विक दर्शनों, मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों और समाजशास्त्रीय सत्यों को एक धरातल पर लाकर देखें तो इनमें से एक सार्वभौमिक संदेश पूरी स्पष्टता के साथ उभरता है- उग्रता, गुस्सा और चिल्लाहट कभी भी ताकत की निशानी नहीं हैं, बल्कि ये मनुष्य की आंतरिक कमजोरी, असुरक्षा और मानसिक हार के लक्षण हैं। इसके विपरीत अपनी बात पर पूरी ईमानदारी से अडिग रहते हुए भी वाणी में सौम्यता बनाए रखना और मीठी वाणी व आंतरिक धीरज का आध्यात्मिक संतुलन बनाना ही ब्रह्मांड की असली और सबसे बड़ी ताकत है।

आज जब हमारे परिवार बिखर रहे हैं, अदालतें आपसी मुकदमों से पटी पड़ी हैं और समाज में अकेलापन एक महामारी का रूप ले रहा है, तब हमें इस "सौम्य पर दृढ़" (Polite but firm) के सनातन सूत्र की सबसे ज्यादा जरूरत है। निष्कर्षों पर पहुँचने की अपनी इस आत्मघाती जल्दबाजी को हमें रोकना होगा और संवाद की उस मेज पर बैठना होगा जहाँ हमारी वक्तृत्व क्षमता सामने बैठे व्यक्ति को नीचा दिखाने या उकसाने का नहीं बल्कि समस्या की तह तक जाने का मार्ग प्रशस्त कर सके। जब हम अपने मन्तव्य में दृढ़ता के साथ-साथ अपनी भाषा में सौम्यता समाहित करेंगे, तो परिवार-परिसर-समाज का बिखरा हुआ ढाँचा फिर से संवर उठेगा। सन्त कबीरदास जी का यह कालजयी और अमर दोहा इसी परम सत्य और वाणी के जादुई प्रभाव से बिखरते रिश्तों को संजोने की सबसे व्यावहारिक सीख देता है:



"ऐसी बानी बोलिये, मन का आपा खोये
औरन को शीतल करे, आपहु शीतल होये॥"



अजय कुमार पाल
सहायक लेखाधिकारी

हर भूमिका को निभते-निभाते,
कभी कशमकश में, कभी मुस्कुराते,
बस किरदार-किस्सा बना जा रहा हूँ,
धारा के रुख में बहा जा रहा हूँ।

स्वयं को स्वयं से ही छिपते-छिपाते,
संभलते कभी, तो कभी लड़खड़ाते,
जिधर कारवाँ है, उधर जा रहा हूँ,
धारा के रुख में बहा जा रहा हूँ।

सवालियों के जालों को बुनते-बुनाते,
कभी खुद उलझते, कभी सुलझाते,
यादों के भँवर में, समा जा रहा हूँ,
धारा के रुख में बहा जा रहा हूँ।

अंधेरों-उजालों से बचते-बचाते,
कभी दूर जाते, कभी पास आते,
अपनी ही लौ में, जला जा रहा हूँ,
धारा के रुख में बहा जा रहा हूँ।

तरानों-फसानों को सुनते-सुनाते,
कभी मौन रहते, कभी गुनगुनाते,
बस अपनी ही धुन में, जिए जा रहा हूँ,
धारा के रुख में बहा जा रहा हूँ।

सब पड़ावों को पार करते-कराते,
कभी टूट जाते, कभी आस पाते,
समय की शिला पर घिसा जा रहा हूँ,
धारा के रुख में बहा जा रहा हूँ।

परिस्थितियों के बन में, घिरते-घिराते,
भटकते कभी, तो कभी ठाँव पाते,
कठिन हर डगर, पर चला जा रहा हूँ,
धारा के रुख में बहा जा रहा हूँ।

धरा-रेत-पट पर, रोज लिखते-लिखाते,
कभी कुछ बनाते, कभी कुछ मिटाते,
क्षणों का ही साक्षी, बना जा रहा हूँ,
धारा के रुख में बहा जा रहा हूँ।



दिख जाएंगे शाह कहीं और जो कि अपनी प्रेयसी की याद में ताजमहल बनवाए हैं, यहाँ तो याद में निज हाथों से पहाड़ को चीरा है। होंगे शूरवीर कहीं जो अपनी सुरक्षा के लिए किले बनाए हों, पर आम जनता के लिए कलकत्ता से लाहौर तक सड़क बनाने वाला शूरवीर "शेर" शाह मिलेंगे बिहार में। किले तो ठीक पर आम के लिए क्या? चले आओ उस धरा पर जहाँ पथिकों के विश्राम के लिए सराय, प्यास बुझाने के लिए कुएँ और ज्ञान बाँटने को शिला पर शब्द खुदे मिलेंगे। विश्व जगत में लोकतंत्र को समर्पित पहला गणराज्य इस धरा पर ही उपजा था। वो औरों के होंगे बादशाह जो निकलते थे विश्व जीतने अपनी महासेना लेकर। अरे! हमारे राजा तो अपने राजदुलारे और राजदुलारी को विश्व भर को शांति और अहिंसा का पाठ पढ़ाने दूर समुद्र के पार भेजे थे। भला पश्चाताप की ज्वाला में कोई कभी अशोक सा जला है? बनाए होंगे दुर्ग-दरवाजे, यहाँ तो पूरे जगत को ज्ञान बाँटने विश्वविद्यालय खुले थे। है गवाह, आज भी नालंदा की टूटी दीवारों, कितनी मेधा विश्व को दिए है। छोड़ो इन टूटी दीवारों को, हमारे पीपल और शाल के तले भी ज्ञान झरता है। मानवता को मार्ग दिखाने वाले, खालसा के प्रवर्तक गुरु गोविंद सिंह भी इसी धरा से निकले थे। भोजपुरी, मैथिली, अंगिका, मगही के स्वरों से गुंजित है यह धरती, हर एक बोली में अपना जादू है। बहुत पावन है पर्व छठ मईया का, इनके गीत मिथी-से कानों में घुलते जाते हैं। इनकी गाथा... कभी और, चलो... हो चुका इतिहास, अब गौरव-गाथा कुछ नई भी बुझाते हैं, विद्यापति के शृंगार रस से बढ़कर दिनकर के ओज से धमनियों में उबाल आते हैं। यहाँ भिखारी ठाकुर के नाटक 'विदेशिया' से हृदय पसीज जाते हैं। गांधी जी ने भी अपने यज्ञ की पहली आहुति हेतु इसी धरा को चुना। धनानंद को सबक सिखाने वाले चाणक्य तो याद होंगे, चंद वर्ष पहले लोकतंत्र की लाज बचाने वृद्ध लोकनायक की दहाड़ भी अभी ताजा है? लोकनायक की बात छोड़ो, लोकतंत्र का सबक बताने वाले जननायक कर्पूरी जी भी यहीं हुए। रत्नों से भरे इस भाग में कुछ और रत्न बताना छूट गया। बिन बिहार की बिटिया के क्या मर्यादा पुरुषोत्तम की गाथा पूरी हो सकती है भला? साक्षी है माँ गंगा भी, बक्सर से साहेबगंज तक जिनकी निर्मलता नए मानक गढ़ती है।

नजरो पर छाई कुछ धुंध छंट गई हो अगर तो चलिए अब कुछ खाने की बात करते हैं। लिट्टी-चोखा का स्वाद चखना हो तो किसी रेस्त्रां या ढाबे पर न जाइए, असली स्वाद मिलेगा वहाँ खुले मैदान में चार यारों के बीच गोइठा (उपले) की मंद आँच पर सिक रहा हो लिट्टी जहाँ। लिट्टी तक ही मत सीमित रहना, थोड़ा और बढ़कर मिथिला से दही-चूड़ा भी चखते आना। घर के लिए सिलाव का खाजा, थावे की चंद्रकला, उदवंतनगर का खुरमा (बेलग्रामी) लेते आइए क्योंकि और कहीं यह नहीं मिलेगा। और भी बहुत कुछ है देने को, केवल मधुबनी के रंग में घुल न जाइए। आइए कभी बिहार, केवल पितरों को तर्पण देने नहीं, बल्कि अपनी पिपासा बुझाने, अपना ज्ञान बढ़ाने और इस मिट्टी की आत्मा को महसूस करने भी आइए।





जसवंत सिंह
बाह्यस्रोतकर्मी

है स्त्री वह उसका कोई दोष नहीं
जन्म लेते वक्त कोई उसे लक्ष्मी मानता,
तो कोई परेशानी
होती है वह प्यारी सी नटखट माँ-बाप की परी
फिर क्यों उन्हें बेरोक-टोक जीना है नहीं सिखाते?
बचपन से है उन्हें सिखाया जाता ये मत करो,
वहाँ मत जाओ
होती है हर घर में माँ-बहन,
होती है हर घर में माँ-बहन।

फिर क्यों उन्हें है असुरक्षा का डर
है क्या बिगाड़ा उन्होंने जो सहती हैं अपशब्द
क्या स्त्री पैदा होना, है गुनाह कोई
विवाह कर वह ससुराल जाती
फिर भी मायके की वह देखभाल करती
रिश्ता चाहे हो माँ बेटी बहन पत्नी का
बड़े प्यार से है वह निभाती
तो फिर क्यों उन्हें पुरुष-समान सम्मान है नहीं मिलता?
है स्त्री वह उसका कोई दोष नहीं,
है स्त्री वह उसका कोई दोष नहीं।



मौन के उस पार



विक्रान्त कुमार
सहायक लेखाधिकारी

लिख डालूँ अपने मन में दबी एक आस को,
या शब्दों में उकेरूँ इस अज्ञान की प्यास को,
रणछोड़ की भाँति गीता का सार लिख दूँ,
या लिख दूँ राधा की मिलन की आस को॥
पर....कभी शब्द कम पड़ जाते हैं, कभी होते ही नहीं,
या बाँध नहीं पा रहे मेरे मन के आह्लाद को,
कभी ठहर जाते हैं अर्थ की देहरी पर,
कभी बिन बोले पूर्ण करे प्रेम-संवाद को॥
भाव आगे कलम पीछे रह जाती है,
कभी अर्थ की तुकबंदी बड़ा सताती है,
शब्दों को पिरोना आसान नहीं है शायद,
ये गीतमाला भी अपना हक जताती है॥
शब्दों का भी मन होता होगा शायद,
चुन लेते हैं वो अपने मन-मीत को,
यूँ तो निःशब्दता भी भावों को बयान कर देती है,
फिर पपीहा क्यों सुनाता है अपने गीत को?
कभी-कभी चुप्पी भी पेशान कर देती है,
दोनों अधरों को थार कर देती है,
अपनों से बोल लेना अच्छा है जनाब,
ये चुप्पी रिश्तों को बीमार कर देती है॥
इसलिए कुदरत बोलना पहले सिखाती है,
सिखाती है... लिखने से पहले बोलना जरूरी है,
इसलिए कविता को केवल लिखना नहीं, जीना जरूरी है,
क्योंकि जो केवल लिखी जाए, वह रचना है;
जो जी ली जाए, वही कविता है।





प्रकृति से बड़ा और अद्भुत रंगों का कोई चित्रकार नहीं है। जब हम प्रकृति के संदर्भ में रंगों की नज़ाकत की बात करते हैं, तो इसका अर्थ केवल विभिन्न रंगों की उपस्थिति नहीं है, बल्कि उनके बीच का वह सूक्ष्म तालमेल, कोमलता, संवेदनशीलता और गहराई है जो हर पल बदलती रहती है। प्रकृति में रंगों का यह खेल इतना नाजुक और सटीक होता है कि यह हमारी आत्मा को सीधे छू लेता है। यदि हम अपने आस-पास बिखरे इस असीमित कैनवास को ध्यान से देखें, तो हमें समझ आता है कि यहाँ कोई भी रंग बिना वजह या बिना संतुलन के नहीं है। हर शेड, हर टोन और हर चमक के पीछे एक गहरा प्राकृतिक नियम और अप्रतिम कलात्मकता छिपी हुई है।

प्रकृति की सबसे सुंदर नज़ाकत उसकी ऋतुओं के क्रमिक बदलने और उनके साथ आने वाले रंग-परिवर्तन में दिखाई देती है। प्रत्येक ऋतु अपने साथ रंगों का एक अनुठा और विशिष्ट पैलेट लेकर आती है, जो पृथ्वी का पूरा परिदृश्य बदल देता है। बसंत ऋतु में प्रकृति गहरे हरे और चटक रंगों के बजाय हल्के, नाजुक और पेस्टल रंगों का उपयोग करती है। पेड़ों पर आने वाली नई कोंपलों का हल्का तांबे जैसा लाल रंग और फूलों का हल्का गुलाबी, लैवेंडर व पीलापन बेहद संवेदनशील होता है। यह रंग इतने सौम्य होते हैं कि ऐसा लगता है जैसे प्रकृति ने अभी-अभी अपनी आँखें खोली हों। इसके बाद ग्रीष्म ऋतु आती है, जहाँ तेज धूप के कारण रंग चटक और तीखे हो जाते हैं, मानो प्रकृति अपनी पूरी ऊर्जा का प्रदर्शन कर रही हो। लेकिन मानसून के आते ही धूल और कड़ाके की धूप से झुलसी प्रकृति अचानक गहरे और सघन हरे रंगों में बदल जाती है। यह हरा रंग भी एक जैसा नहीं होता; पत्तियों की नसों से लेकर उनके सिरों तक और घने जंगलों से लेकर घास के मैदानों तक हरे रंग के सैकड़ों शेड्स दिखाई देते हैं। वर्षा की बूंदें जब इन पत्तियों पर गिरती हैं, तो हरे रंग की नज़ाकत और भी निखर जाती है। वहीं पतझड़ के समय रंगों की नज़ाकत अपने एक अलग ही चरम पर होती है।



इस समय हरी पत्तियाँ धीरे-धीरे सुनहरे, नारंगी, तांबे जैसे और गहरे भूरे रंग में तब्दील हो जाती हैं। यह बदलाव एक इतनी धीमी और खूबसूरत प्रक्रिया है कि यह जीवन के चक्र, ठहराव और विदाई की नज़ाकत को बयां करती है। इसके बाद सर्दियों का कोहरा और बर्फबारी रंगों को एकदम शांत और धीमा कर देती है, जहाँ सफेद और सलेटी रंगों का साम्राज्य होता है।

दिन के चौबीस घंटों की अवधि में भी आसमान में रंगों की जो नज़ाकत बिखरती है, वह किसी महान जादुई कलाकृति से कम नहीं है। सूर्योदय और सूर्यास्त के समय आकाश केवल एक या दो रंगों (जैसे लाल या पीला) में नहीं रंगा होता। यदि आप उस समय क्षितिज को ध्यान से देखें, तो उसमें केसरिया, सिंदूरी, हल्का जामुनी, गहरा नीला और गुलाबी रंग इस तरह एक-दूसरे में घुले होते हैं कि उनकी सीमा तय करना असंभव होता है। रंगों का यही आपस में धीरे से मिल जाना, जिसे कला की भाषा में 'ब्लेंडिंग' कहते हैं, उनकी असली नज़ाकत है। भोर की पहली किरण का हल्का सोने जैसा रंग और शाम के ढलते सूरज की मखमली लालिमा मानव मन को एक अजीब से सुकून और विस्मय से

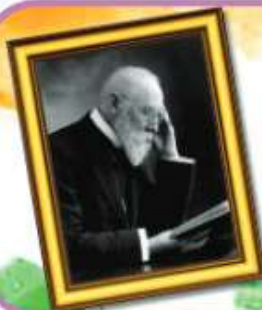
भर देती है। रात के समय यही आसमान गहरे नीले और काले रंग की मखमली चादर में बदल जाता है, जिस पर तारों की चांदी जैसी चमक रंगों के एक अलग ही विरोधाभास को जन्म देती है।

इसके अलावा, प्रकृति ने हर छोटे-बड़े जीव, कीट-पतंगों और वनस्पतियों को रंगों की बेहद बारीक और जटिल कारीगरी से नवाजा है। एक छोटी सी तितली के पंखों को सूक्ष्मदर्शी से देखा जाए, तो उन पर रंगों के हजारों छोटे-छोटे डॉट्स, महीन रेखाएं और पैटर्न्स होते हैं। यह रंग इतने नाजुक होते हैं कि उंगलियों से छूने मात्र से ही उनका पाउडर जैसा रंग उतर जाता है। मोर के पंखों को देखें, तो उनमें नीले, हरे और सुनहरे रंग का जो धात्विक प्रभाव होता है, वह रोशनी के कोण के साथ अपना रंग बदलता प्रतीत होता है। इसे विज्ञान में 'इरिडिसेंस' कहते हैं, जो रंगों की नज़ाकत का एक उत्कृष्ट भौतिक उदाहरण है। फूलों की पंखुड़ियों में तो रंगों का सम्मोहन देखते ही बनता है। किसी गुलाब, कमल या ऑर्किड के फूल को ध्यान से देखें, तो उसकी पंखुड़ी के आधार पर रंग बिल्कुल हल्का या सफेद होता है और किनारों तक आते-आते वह गहरा, गाढ़ा या एकदम किसी दूसरे रंग में बदल जाता है। रंगों का यह धीमा और क्रमिक विकास प्रकृति की उस बारीक सोच को दिखाता है जो उसने हर एक रचना में डाली है।

समुद्र और पानी के स्रोतों में रंगों का खेल भी अद्भुत है। पानी का अपना कोई रंग नहीं होता, लेकिन वह आकाश के रंगों को और अपने भीतर की गहराइयों को सोखकर नीले, फ़िरोज़ा (Turquoise) और गहरे हरे रंग की ऐसी परतें बनाता है जो लहरों के साथ बदलती रहती हैं। उथले पानी का हल्का पारदर्शी हरा रंग और गहरे समुद्र का असीमित गहरा नीला रंग प्रकृति की विशालता और उसकी सूक्ष्मता को एक साथ प्रदर्शित करता है। जब सूर्य की किरणें पानी की बूंदों से होकर गुजरती हैं, तो इंद्रधनुष के सात रंगों का जन्म होता है। यह इस बात का प्रमाण है कि प्रकृति ने अपने भीतर रंगों का कितना बड़ा खजाना छुपाकर रखा है, जो केवल सही समय और सही परिस्थिति में ही प्रकट होता है।

प्रकृति के रंगों की यह नज़ाकत केवल देखने में सुंदर नहीं है, बल्कि इसका गहरा वैज्ञानिक, जैविक और मनोवैज्ञानिक प्रभाव हमारे पूरे अस्तित्व पर पड़ता है। जीवों के लिए ये रंग केवल सुंदरता का साधन नहीं हैं, बल्कि उनके जीवित रहने का आधार हैं। कई जीव इन रंगों का उपयोग करके खुद को बैकग्राउंड में छुपा लेते हैं (Camouflage) ताकि वे शिकारियों से बच सकें, जबकि फूल अपने चटक रंगों से मधुमक्खियों और तितलियों को परागण (Pollination) के लिए आकर्षित करते हैं। इंसानी मन की बात करें, तो समुद्र का असीमित नीला रंग और जंगलों का सौम्य हरा रंग हमारे मस्तिष्क की तरंगों को शांत करता है, रक्तचाप को नियंत्रित करता है और तनाव को पूरी तरह दूर करता है। इसके विपरीत, उगते सूरज का लाल और पीला रंग हमारे भीतर नई ऊर्जा, उत्साह और रचनात्मकता का संचार करता है। जब हम प्रकृति के इन सूक्ष्म और जीवंत रंगों के बीच कुछ समय बिताते हैं, तो हमारा मानसिक स्वास्थ्य सुधरता है और हम खुद को अंदर से तरोताजा महसूस करते हैं।

अंततः, प्रकृति में रंगों की नज़ाकत हमें जीवन का एक बहुत बड़ा दर्शन सिखाती है। यह हमें बताती है कि असली सुंदरता हमेशा चिल्लाने, चटक होने या अत्यधिक दिखावे में नहीं होती, बल्कि सौम्यता, धीमेपन और आपस के सामंजस्य में होती है। जैसे प्रकृति के तमाम रंग बिना किसी शोर के एक-दूसरे के साथ मिलकर पूरी धरती को सुंदर बनाते हैं, वैसे ही मानव जीवन में भी विभिन्न भावनाओं और विचारों का संतुलन होना चाहिए। आज के इस आधुनिक और कंक्र्रीट के युग में, जहाँ प्रदूषण और शहरीकरण के कारण प्रकृति के ये रंग फीके पड़ रहे हैं, हमारा यह परम कर्तव्य बन जाता है कि हम इन बेहद नाजुक रंगों को सहेजें। पर्यावरण की रक्षा करना केवल पेड़ों को बचाना नहीं है, बल्कि प्रकृति की इस अनमोल और खूबसूरत रंगीन कैनवास को जीवित रखना है, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ भी इस नज़ाकत को देख सकें, महसूस कर सकें और इससे प्रेरणा ले सकें।



"हिंदी आम
बोलचाल की
'महाभाषा' है"

जॉर्ज ग्रियर्सन

दिनांक 20.02.2026 को अगरतला (त्रिपुरा) में आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन की कार्यक्रम आख्या

पूनम शर्मा

सहायक निदेशक (राजभाषा)



अगरतला में 20 फरवरी 2026 को आयोजित संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन पूर्वी, उत्तर-पूर्वी एवं उत्तरी क्षेत्रों के अधिकारियों के लिए एक महत्वपूर्ण मंच साबित हुआ। गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा अगरतला के हापानिया अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनी केंद्र के इनडोर हॉल में आयोजित इस सम्मेलन का उद्घाटन केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी ने किया, जिसमें देश भर से लगभग तीन हजार प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस सम्मेलन में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन पर चर्चा, पुरस्कार वितरण, प्रदर्शनियाँ, पुस्तक-विमोचन एवं योग शिविर जैसी गतिविधियाँ आयोजित हुईं। कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) उत्तराखण्ड की तरफ से उक्त सम्मेलन में सुश्री पूनम शर्मा, सहायक निदेशक (राजभाषा) तथा डॉ० दिनेश शर्मा, सहायक लेखाधिकारी ने प्रतिभाग किया।

विस्तृत रिपोर्ट

अगरतला में 20 फरवरी 2026 को आयोजित पूर्वी, उत्तर-पूर्वी एवं उत्तरी क्षेत्रों के संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन के अवसर पर गृह एवं सहकारिता मंत्री ने राजभाषा विभाग के अंतर्गत गठित भारतीय भाषा अनुभाग का लोकार्पण किया। श्री अमित शाह ने जोर देकर कहा कि राजभाषा का प्रचार-प्रसार तब तक नहीं हो सकता जब तक हम अपनी सभी स्थानीय भाषाओं को मजबूत न करें और राजभाषा का इनके साथ संवाद स्थापित न करें। उन्होंने हिन्दी एवं स्थानीय भाषाओं के बीच सद्भाव पर बल दिया। अपने संबोधन में श्री अमित शाह ने कहा कि पिछले 75 साल की यात्रा हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकार कर इसके



माध्यम से देश की सभी स्थानीय भाषाओं को जोड़ते हुए अपने संस्कार, संस्कृति, भाषाओं, साहित्य, कला और व्याकरण को संरक्षित और संवर्धित करने की यात्रा रही है। उन्होंने कहा कि हिन्दी की 75 वर्षों की यह यात्रा अब अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के अंतिम पड़ाव पर खड़ी है और आज का दिन हिन्दी को संपर्क, जन भाषा, तकनीक और अंतराष्ट्रीय भाषा बनाने का दिन है।

उन्होंने कहा, "हिन्दी और स्थानीय भाषाओं के बीच कभी संघर्ष नहीं हो सकता क्योंकि ये एक ही माँ की दो बेटियाँ हैं। हिन्दी सभी भाषाओं की मित्र है। जब हिन्दी को बढ़ावा दिया जाता है, तो सभी भाषाएँ मजबूत होती हैं।" उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व की सराहना करते हुए कहा, "प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में पूरे देश में अपनी भाषा को सीखने और अपनाने का संकल्प मजबूत है।"

इस मौके पर त्रिपुरा के मुख्यमंत्री माणिक साहा ने मा० अमित शाह के त्रिपुरा आगमन पर धन्यवाद ज्ञापित किया। उन्होंने त्रिपुरा सरकार द्वारा हिन्दी प्रचार के प्रयासों को रेखांकित किया तथा केंद्र-राज्य सहयोग की आवश्यकता पर जोर दिया। साहा ने कहा कि राज्य राजभाषा नीति को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए प्रतिबद्ध है।

इस अवसर पर केंद्रीय मंत्री बंडी संजय कुमार, त्रिपुरा के पूर्व मुख्यमंत्री एवं लोकसभा सांसद विप्लव देव, राज्यसभा सांसद राजीव भट्टाचार्य तथा



लोकसभा सांसद महारानी कृति सिंह देव वर्मन भी मंच पर उपस्थित रहे। इन सभी नेताओं ने हिन्दी को प्रशासनिक एकता का माध्यम बताते हुए उसके प्रचार में योगदान का आह्वान किया। त्रिपुरा विश्वविद्यालय हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रोफेसर मिलन रानी जमातिया ने हिन्दी शिक्षा एवं साहित्यिक योगदान पर प्रकाश डाला। सम्मेलन के दौरान इस बात पर सभी एकमत रहे कि केंद्र सभी भारतीय भाषाओं के विकास के लिए प्रतिबद्ध है तथा हिन्दी थोपने का कोई इरादा नहीं है। अंत में राजभाषा विभाग की सचिव अंशुली आर्या ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

पुरस्कार एवं सम्मान

वर्ष 2024-25 के दौरान राजभाषा के प्रगामी प्रयोग के लिए केंद्रीय कार्यालयों, बैंकों एवं उपक्रमों को कुल 80 क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार मंचासीन गणमान्य अतिथियों के करकमलों से प्रदान किए गए। साथ ही 'नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) राजभाषा सम्मान' भी वितरित हुए। मा० गृह मंत्री तथा मंचस्थ अतिथियों ने उद्घाटन सत्र में राजभाषा भारती का पूर्वोत्तर विशेषांक तथा भारतीय भाषाओं एवं संस्कृत साहित्य पर दो पुस्तकें जारी कीं।

प्रदर्शनियाँ एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ

कार्यक्रम स्थल पर सरकारी कार्यालयों, सशस्त्र पुलिस बलों, बैंकों, साहित्यिक संगठनों, हस्तशिल्प एवं अन्य संस्थाओं के स्टॉल लगे, जहाँ राजभाषा में नवाचार को खासतौर पर प्रदर्शित किया गया था। विशेष रूप से हिन्दी शिक्षण तथा राजभाषा से जुड़े नवाचारों पर केंद्रित केंद्रीय विद्यालय संगठन की प्रदर्शनी अत्यंत मनमोहक और सराहनीय थी। सम्मेलन के दौरान अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान के चिकित्सकों द्वारा आयोजित एक प्रदर्शनी में स्वास्थ्य संरक्षण के लिए आयुर्वेद की भूमिका को न केवल रेखांकित किया गया बल्कि प्रतिभागियों का नाड़ी-परीक्षण आदि स्वास्थ्य जांच कर उन्हें आयुर्वेदिक औषधियाँ भी वितरित की गई। कार्यक्रम के अंत में पूर्वोत्तर की अनूठी लोक-संस्कृति की झलक दिखाते हुए एक रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुति दी गयी तथा भोजन के पश्चात कार्यक्रम संपन्न हुआ।

इससे पूर्व 19 फरवरी को समस्त प्रतिभागियों का पंजीकरण किया गया एवं उन्हें सम्मेलन की किट वितरित की गयी, जिसमें शामिल स्थानीय काष्ठ कला से निर्मित स्मृति चिह्न को प्रतिभागियों द्वारा सराहा गया। उसी दिन प्रतिभागियों के लिए तनावमुक्त जीवनशैली को बढ़ावा देने के उद्देश्य से दोपहर में एक विशेष योग शिविर भी आयोजित किया गया था, जिसमें आसन, प्राणायाम एवं तनाव प्रबंधन पर महत्वपूर्ण सत्र शामिल थे। आयुर्वेद प्रदर्शनी तथा योग शिविर के रूप में स्वास्थ्य एवं कल्याण से जुड़ी गतिविधियाँ भी सम्मेलन का हिस्सा रहीं, जो प्रतिभागियों के समग्र स्वास्थ्य पर केंद्रित थीं। इस प्रकार इस क्षेत्रीय सम्मेलन ने न केवल भारत की भाषाई विविधता को मजबूत करने का काम किया अपितु पूर्वोत्तर में आयोजित अपनी तरह के पहले आयोजन ने स्थानीय जनमानस को राजभाषा से जोड़ते हुए भाषाई एकता का सफल संदेश दिया।

विशेष : पंजाब नेशनल बैंक की तरफ से आयोजित प्रश्नोत्तरी में डॉ० दिनेश शर्मा ने सभी प्रश्नों का सही उत्तर देकर प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया तथा सेंट्रल बैंक की तरफ से आयोजित प्रश्नोत्तरी में डॉ० दिनेश शर्मा को प्रश्न का सही उत्तर देने पर 'राजभाषा हीरक जयंती' का डाक टिकट प्रदान किया गया।



सुशील कुमार देवली
वरिष्ठ लेखाधिकारी



मुसीबत में पत्थरों को उबाल के रखता है,
वो हालात के हिसाब से खुद को ढाल के रखता है।

मय से भरी बोतलों को सभी सजा के रखते हैं यहाँ,
खाली बोतलों को कौन यहाँ संभाल के रखता है।

कोई नहीं करता है उसकी बातों पर यकीं,
हर बात पर वो अपना कलेजा निकाल के रखता है।

माँ-बाप को रखता है दूर कहीं यतीमखाने में,
मगर उनकी तस्वीरों को घर की दीवार पे रखता है।





गुमान किस बात का, मोल है बस राख का।
न तेरी मेरी बात का, न किसी जज्बात का।
फिर भी बढ़ा रहा कदम, धुन में सवार हो।
शिखर पर है खड़ा, दिख रहा कंगाल सा।
जल रहा तू रोज है, न जाने क्या खोज है।
विकसित है, विशाल है, जीवन मायाजाल है।
मुक्ति का जो धाम हैं, वही महाकाल हैं।
सवाल किस साख का, मोल है बस राख का।
गुमान किस बात का, मोल है बस राख का।



मेरी कहानी



संदीप शर्मा
लेखाकार

मैं शब्दों में कम, एहसासों में ज्यादा रहता हूँ,
हर रिश्ते को दिल से निभाने की कोशिश करता हूँ।
छोटी-छोटी बातों में खुशियाँ ढूँढ़ लेता हूँ,
और अपनों के लिए हर दर्द भी सह लेता हूँ।

खामोशियों में मेरी कई दास्तानें छिपी हैं,
जिन्हें समझने की फुर्सत किसी को कहाँ मिली है।
मैं वक्त भी देता हूँ, साथ भी निभाता हूँ,
पर अक्सर जरूरतों का साथी ही कहलाता हूँ।

रिश्तों का हिसाब रखना मुझे आता नहीं,
इसलिए शायद मेरे हिस्से में शिकायतें कम नहीं।
चेहरों की मुस्कान के पीछे की नीयत पढ़ लेता हूँ,
फिर भी हर किसी पर आसानी से भरोसा कर लेता हूँ।

जो दिल दुखाए, उससे लड़ता नहीं हूँ,
बस चुपचाप उसे अपनी दुनिया से दूर कर देता हूँ।
हाँ, मैं थोड़ा टूटा हूँ, थोड़ा भावुक भी हूँ,
मगर झूठ से दूर और सच्चाई के करीब भी हूँ।

यही मेरी पहचान है, यही मेरा अंदाज़ है,
दिल से जीना ही मेरे जीवन का राज है।



पुस्तकें बनाम आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस



राजेश अधिकारी
बाह्यस्रोतकर्मी

मानव सभ्यता के विकास में पुस्तकों का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। पुस्तकें सदैव से ज्ञान, संस्कृति, विज्ञान और मानवीय अनुभवों की वाहक रही हैं। दूसरी ओर, इक्कीसवीं सदी में ए.आई. (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) ने ज्ञान प्राप्ति और सूचना के उपयोग के तरीकों में क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया है। वर्तमान युग विज्ञान और तकनीक का युग है। आज मानव जीवन के लगभग प्रत्येक क्षेत्र में तकनीकी साधनों का प्रभाव दिखाई देता है। विशेष रूप से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ने शिक्षा, चिकित्सा, व्यापार, संचार और अनुसंधान के क्षेत्रों में अभूतपूर्व परिवर्तन किए हैं। आज हम पलक झपकने की तीव्रता के साथ ही इसकी सहायता से किसी भी प्रश्न का उत्तर प्राप्त कर सकते हैं। ऐसे में यह प्रश्न स्वाभाविक है कि क्या यह बुद्धिमत्ता पुस्तकों का स्थान ले सकती है या फिर पुस्तकों का महत्व आज भी उतना ही बना हुआ है? क्या आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पुस्तकों के महत्व को कम कर देगा अथवा पुस्तकें आज भी ज्ञान का सर्वोत्तम स्रोत बनी रहेंगी? आज इस विषय पर विचार करने की अत्यंत आवश्यकता है।

प्राचीन काल से ही पुस्तकें मानव ज्ञान और संस्कृति की संरक्षक रही हैं। महान विचारकों, वैज्ञानिकों, साहित्यकारों और दार्शनिकों के विचार पुस्तकों के माध्यम से ही पीढ़ी-दर-पीढ़ी पहुँचते रहे हैं। किसी राष्ट्र का इतिहास, उसका साहित्य, उसके दार्शनिक विमर्श तथा सामाजिक अनुभव पुस्तकों के माध्यम से ही सुरक्षित रहते हैं। जब कोई व्यक्ति पुस्तक पढ़ता है, तो वह केवल जानकारी प्राप्त नहीं करता, बल्कि विषय को समझने, उसका विश्लेषण करने और उस पर विचार करने की क्षमता भी विकसित करता है। पुस्तकें मनुष्य में एकाग्रता और चिंतनशीलता का विकास करती हैं। पुस्तकें मनुष्य को विचारों के क्रमिक अनुशीलन तथा गहन मनन की प्रक्रिया से जोड़ती हैं। पुस्तक पढ़ने की प्रक्रिया व्यक्ति को स्वतंत्र रूप से सोचने और निष्कर्ष निकालने के लिए प्रेरित करती है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की तीव्र प्रगति ने ज्ञानार्जन की पारंपरिक अवधारणाओं को चुनौती अवश्य दी है, किंतु यह तथ्य विस्मृत नहीं किया जा सकता कि ज्ञान का वास्तविक उद्देश्य मात्र सूचना-संग्रह नहीं, बल्कि विवेक, तर्कशक्ति और मूल्यबोध का विकास है। अतः ज्ञान के स्थायी और सार्थक अधिग्रहण के लिए पुस्तकों की आवश्यकता अपरिहार्य बनी रहती है। पुस्तकें केवल बौद्धिक विकास का साधन नहीं हैं, बल्कि वे मानवीय संवेदनाओं, सांस्कृतिक चेतना और सभ्यतागत स्मृतियों की संरक्षिका भी हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता यद्यपि पुस्तकों से प्राप्त सामग्री को प्रस्तुत कर सकती है, किंतु वह स्वयं न तो अनुभव कर सकती है और न ही उन भावनात्मक एवं सांस्कृतिक सूक्ष्मताओं को आत्मसात कर सकती है जो किसी साहित्यिक कृति या दार्शनिक ग्रंथ की आत्मा होती हैं। पुस्तकें मानवता की सामूहिक चेतना की जीवंत अभिव्यक्ति हैं, जबकि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस उस चेतना के संप्रेषण का एक आधुनिक उपकरण मात्र है।

विद्यार्थियों पर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का नकारात्मक प्रभाव: आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधुनिक विज्ञान की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है, जिसने शिक्षा के क्षेत्र में अनेक सुविधाएँ प्रदान की हैं। तथापि, इसके बढ़ते और अनियंत्रित उपयोग ने विद्यार्थियों के समक्ष



अनेक गंभीर चुनौतियाँ भी उत्पन्न कर दी हैं। यदि विद्यार्थी इस पर अत्यधिक निर्भर हो जाते हैं, तो उनके बौद्धिक, शैक्षिक, सामाजिक तथा नैतिक विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। सुविधा और त्वरित उत्तरों की संस्कृति धीरे-धीरे परिश्रम, चिंतन और स्वाध्याय की परंपरा को कमजोर कर रही है।

- सबसे प्रमुख नकारात्मक प्रभाव विद्यार्थियों की स्वतंत्र चिंतन-शक्ति और विश्लेषणात्मक क्षमता पर पड़ता है। शिक्षा का उद्देश्य केवल उत्तर प्राप्त करना नहीं, बल्कि प्रश्नों को समझना, तर्क करना और स्वयं समाधान खोजने की क्षमता विकसित करना है। जब विद्यार्थी प्रत्येक प्रश्न का उत्तर ए.आई. से प्राप्त करने लगते हैं, तो वे गहन अध्ययन और मानसिक श्रम से दूर होने लगते हैं, परिणामस्वरूप उनकी रचनात्मकता, कल्पनाशक्ति तथा समस्या-समाधान क्षमता का विकास बाधित होने लगता है। धीरे-धीरे वे स्वयं सोचने के स्थान पर तैयार उत्तरों पर निर्भर होने लगते हैं।
- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का दूसरा गंभीर दुष्प्रभाव अध्ययन की आदतों में गिरावट है। पहले विद्यार्थी पुस्तकों, संदर्भ ग्रंथों और शोध सामग्री का अध्ययन करके विषय को विस्तार से समझते थे, किंतु अब विद्यार्थी संक्षिप्त और त्वरित उत्तरों से ही संतुष्ट हो जाते हैं। दीर्घकाल में यह प्रवृत्ति ज्ञान के सतहीकरण को बढ़ावा देती है और गंभीर अध्ययन की संस्कृति को कमजोर करती है।
- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का अत्यधिक उपयोग शैक्षणिक ईमानदारी के लिए भी चुनौती बनता जा रहा है। अनेक विद्यार्थी निबंध, परियोजना, असाइनमेंट तथा शोध कार्य स्वयं करने के बजाय आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से तैयार करवा लेते हैं। इससे उनकी लेखन क्षमता, अनुसंधान कौशल और मौलिक अभिव्यक्ति का विकास नहीं हो पाता। साथ ही, यह प्रवृत्ति परिश्रम और नैतिकता जैसे मूल्यों को भी प्रभावित करती है। यदि विद्यार्थी बिना समझे हुए सामग्री प्रस्तुत करने लगें, तो शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य ही नष्ट हो जाता है।
- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर बढ़ती निर्भरता विद्यार्थियों में आत्मनिर्भरता के हास का कारण भी बन रही है। कठिन प्रश्नों का सामना करने, समस्याओं से जूझने और निरंतर प्रयास करने की क्षमता जीवन में सफलता के लिए आवश्यक होती है, किंतु जब हर समस्या का समाधान तुरंत उपलब्ध होने लगे, तो धैर्य, संघर्षशीलता और आत्मविश्वास जैसे गुणों का विकास प्रभावित होता है। इससे विद्यार्थी वास्तविक जीवन की जटिल परिस्थितियों का सामना करने में लगभग असमर्थ हो जाते हैं।
- एक अन्य महत्वपूर्ण समस्या भ्रामक जानकारी से संबंधित है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस द्वारा प्रस्तुत सभी सूचनाएँ सदैव शत-प्रतिशत सही नहीं होतीं। कभी-कभी यह अपूर्ण अथवा तथ्यात्मक रूप से त्रुटिपूर्ण उत्तर भी दे सकता है। यदि विद्यार्थी बिना सत्यापन के ऐसी जानकारी को स्वीकार कर लें, तो उनकी समझ और ज्ञान दोनों प्रभावित होते हैं। विशेष रूप से शोध एवं उच्च शिक्षा के क्षेत्र में यह समस्या अत्यंत गंभीर हो सकती है।
- सामाजिक और मनोवैज्ञानिक स्तर पर भी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का प्रभाव चिंताजनक है। अत्यधिक डिजिटल निर्भरता विद्यार्थियों को पुस्तकों, शिक्षकों और सहपाठियों के साथ होने वाली सार्थक बौद्धिक चर्चा से दूर कर देती है। इससे संवाद कौशल, सहयोग की भावना और सामाजिक सहभागिता में कमी आती है। साथ ही, तकनीकी साधनों पर अत्यधिक निर्भरता से मानसिक एकाग्रता और ध्यान केंद्रित करने की क्षमता भी प्रभावित होती है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस शिक्षा का एक उपयोगी साधन अवश्य है, किंतु इसका अनियंत्रित और अत्यधिक उपयोग न केवल विद्यार्थियों के बल्कि हम सभी के सर्वांगीण विकास के लिए हानिकारक सिद्ध हो सकता है। यह स्वतंत्र चिंतन, अध्ययनशीलता, मौलिकता, नैतिकता तथा आत्मनिर्भरता जैसी महत्वपूर्ण क्षमताओं को कमजोर कर सकता है। इसलिए आवश्यक है कि हम आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को केवल एक सहायक उपकरण के रूप में ही उपयोग करें, न कि अपने ज्ञान और अध्ययन का एकमात्र आधार बनाएँ। पुस्तकों, शिक्षकों और स्वाध्याय के साथ संतुलित रूप से इसका प्रयोग ही शिक्षा को सार्थक और प्रभावी बना सकता है। यदि कृत्रिम बुद्धिमत्ता को पुस्तकीय अध्ययन का विकल्प मान लिया गया, तो समाज में सतही ज्ञान, बौद्धिक आलस्य और विश्लेषणात्मक क्षमता के हास का संकट उत्पन्न हो सकता है। दूसरी ओर, यदि तकनीकी साधनों की उपेक्षा की गई, तो ज्ञान-विस्तार और अनुसंधान की आधुनिक संभावनाओं से वंचित होना पड़ेगा। अतः आदर्श स्थिति यही है कि पुस्तकें ज्ञान के मूलाधार के रूप में प्रतिष्ठित रहें तथा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस उस ज्ञान के संवर्धन, प्रसार और व्यावहारिक अनुप्रयोग का माध्यम बने। यही समन्वित दृष्टिकोण भविष्य के ज्ञान-समाज को अधिक विवेकशील, सृजनात्मक और मानवीय बना सकता है।

बादल-वास्को उड़ान गाथा



शिवम सिंह 'शिवोहम'

खण्डीय लेखाधिकारी

लोरी में नींद की गोली होती है। बचपन में माँ लोरी में नींद को किसी निद्रा के वन से बुलाया करती थी और नींद दौड़ी-भागी चली आती थी। मानो वह लोरी की दासी हो या उसने कसम खाई हो कि जो भी लोरी गायेगा, वह वहाँ दौड़ी चली जायेगी। नींद से हमारी मुलाकात कुछ यूँ हुआ करती थी कि हम सो जाया करते थे। आज मेरे सामने वही लोरी गाई जा रही है और बचपन सो रहा है। लोरी के शब्द मेरे कानों में भी गूँज रहे पर मुझे नींद छोड़ दीजिए अभी तक एक झपकी भी नहीं आई है। डर है कि किसी प्रकार की कोई आहत हुई नहीं कि वास्को की नींद टूट सकती है। दिमाग के पास गोलियों की दुकान हुआ करती है। मौका मिलने पर दिमाग अलग-अलग गोली देता रहता है जैसे आज इतने सालों बाद मुझे पता चला कि इसने नींद को भी गोली दे रखी है। अब जैसे ही मैंने यह निष्कर्ष निकाला है कि दिमाग फिर से बीच में कूद पड़ा है और फिर से एक नई गोली दे रहा है कि समय के साथ तुम्हारे अंदर 'लोरी' को लेकर एक रेजिस्टेंस डेवेलप हो चुका है। गर रात यूँ बीतेगी तो जाहिर है उठने से पहले सूरज चाचा अपनी किरणें बिखेर चुके होंगे। आँखों में एक हल्का दर्द होगा और शरीर में एक परमानेंट आलसपना चाय पीने का यह अच्छा बहाना भी हुआ करता है। फिलहाल ऐसे में दिन देरी से शुरू होता है। 'देरी में' एक इत्मीनान होता है और समय से होने में एक जल्दबाजी। मुझे इत्मीनान से बैठकर चाय पीना भाता है।

आजकल पहाड़ों में ठंडी हवा की बाँसुरी पर खड़ी धूप नृत्य करती नजर आती है। छाँव में हल्की सी ठंड लगती है और धूप खुले में जाने नहीं देती। और अगर मौसम बन गया तो न जाने कहाँ से बादल टहलते हुए अचानक चले आयेंगे... फिर तो कब बारिश हो जाये कुछ कह नहीं सकते। काफी पहले मुझे सपने आते थे कि मैं एक बादल की नाव पर बैठा हूँ कि अचानक बादल बरस पड़ते हैं। बादलों से मेरी अलग ही अनुरक्ति है। अगर कोई मेरी ख्वाइश पूछे तो शायद बादल हो जाना चाहूँगा। बादल बन चीड़, देवदार की फुनगियों से होकर गुजरते हुए किसी गुमनाम पर्वत की चोटी पर बैठ चाय पीना चाहूँगा। कुमाऊँ की इस सुंदर सोर घाटी में मौसम पूरे दिन में कई रंग बिखेरता है। कभी सूरज सिर के ठीक ऊपर चमकता है तो कभी मिनट भर में आसमान अपना खजाना खोल दिया करता है। बादलों की नदी बहने लगती है। वो गलते जाते हैं और छोटी-बड़ी बूंदों में ढलते जाते हैं। कभी-कभी तो वो खिड़कियों से कमरे में आ मुझे बाहर डुबकी लगाने का आमंत्रण दे जाते हैं। मेरा चंचल मन इन आवारा बादलों के साथ घुल-मिल कर बह जाना चाहता है... बहते-बहते कहीं दूर निकल जाना चाहता है। गर बूँदा-बूँदी शुरू हो जाती है तो फटाफट दो कप कड़क चाय बनाता हूँ। चुस्कियों के बीच चाय में बारिश की गिरती बूँदें मिलाता रहता हूँ। ऐसा लगता है बादल से मिल पा रहा हूँ। ऊपर आसमान को देखती आँखों पर जब कोई बूँद टकरा जाती है तो पूरे शरीर में सनसनाहट के साथ अंदर आत्मा तक उतर जाती है।

हर हफ्ते बिटिया रुनझुन का नया नामकरण होता है फिलहाल वास्को ट्रेडिंग पर हैं। बारिश में मैं और वास्को खिड़की के पास बैठकर आते-जाते कुत्ते, बिल्ली, बंदर, गाड़ी देखा करते हैं। वास्को को खरगोश बहुत पसंद है शायद इसलिए वो अक्सर मुझे झूठ-मूठ का खरगोश दिखाया करती है। हो सकता हो उसे दिखाता भी हो जैसे कभी-कभी मुझे बादलों में जहाज दिखा करते हैं। छुट्टी का दिन है। मैं निर्मल वर्मा की 'चीड़ों पर चाँदनी' ढूँढ़ रहा हूँ। तकिये के नीचे रखी हुई मिली। न जाने कैसे वास्को को मेरे घर से बाहर जाने का अंदाजा पहले से हो जाता है। ऐसे में दो ही रास्ते बचते हैं या तो मैं भी न जाऊँ या फिर उसका साथ चलना निश्चित है। मेरी उँगली पकड़े हुए वो चल रही है। दिन भर से कैद वास्को ने मछली पकड़ने का फरमान जारी किया है। एक दिन यूँ ही बहती धारा में एक कंकड़ फेंककर मैंने कह दिया था कि वो देखो - 'मछली'। उस दिन के बाद से जब मैं एक-एक करके पानी में कंकड़ फेंकता हूँ तो वह उठते बुलबुलों को मछली कहकर खुश हो जाती है। ये पहली बार का वाकया था। अब तो वो कम से कम पचासों बार खुद कंकड़ फेंकती है और मछली-मछली कहते हुए खुश होती है। हर बार

एक समान खुशी से कूदती हुई फिर से कंकड़ फेंकती है। और ठीक उसी उत्साह से मछली कहकर खुश होती है जैसे पहली बार कहा था।

चारों ओर फैली शांति के बीच चिड़ियों की चहचहाहट और ठीक बगल से बहते हुए पानी के धारे की कल-कल की आवाज ध्वनित हो रही है। हम धारे के पास देवदार के दो पेड़ों के नीचे अपने पुराने अड्डे पर जाकर बैठ गए। वहाँ अगल-बगल दो पेड़ खड़े हैं। मैं और वास्को अक्सर वहीं जाया करते हैं। मैंने एक देवदार के पेड़ के नीचे टेक लगाकर 'चीड़ों पर चाँदनी' के पन्ने खोल लिए हैं। वास्को इधर-उधर दौड़ते हुए कुछ उठाने, सहेजने में जुट चुकी है। मेरी एक आँख किताब के पन्ने और दूसरी वास्को पर नाच रही है। हर पल के साथ वास्को के बढ़ते दायरे को समेटना जरूरी हो जाता है। मैंने समझाया है कि इन दो पेड़ों के बीच में ही खेलना है। दूर नहीं जाना है। एक बार मैं बात मान जाए वो बचपन कैसा! अब किताब बगल में रख दी गई है। सामने हरी घास पर जमी रात की ओस की बूँदें सूरज की किरणों को सतरंगी बना चमका रही हैं। पेड़ का टेक लिए गगन में उड़ते पक्षियों और बादलों को अनायास तक रहा हूँ। देवदार के गगनचुम्बी तरुओं के पीछे से दिखते सूरज की झिलमिल रोशनी में भीग रहा हूँ। उधर वास्को को कोई नया छोटा सा कीड़ा या कोई अलग-सा पौधा दिख गया है। कौतूहल से परिपूर्ण होकर वह मुझे दिखला रही है... मैं उत्साहित होने का प्रयत्न करता हूँ पर शायद वास्को के स्तर तक न हो पाता हूँ। मेरी प्रतिक्रिया आने से पहले वह कुछ नया ढूँढ़ने में लग चुकी है। उस दिन उसने कहा कि पापा वो आपका पेड़ 'मारिया' और ये मेरा पेड़ 'फेरिया'। किसी वस्तु या स्थान को नाम देने से लगाव और बढ़ जाता है और वही हुआ। अब हम टहलने नहीं जाया करते हैं... बल्कि अब हम मारिया और फेरिया से मिलने जाया करते हैं।

मारिया-फेरिया के तने से टेक लगाये बैठा हूँ। सूरज की किरणें धीरे-धीरे साँसों को उष्मित कर रही हैं। हाथ में किताब हो और चेहरे पर हल्की धूप; इससे ज्यादा सुकून आखिर क्या हो सकता है? कुछ देर पढ़ा और कुछ देर पढ़े को जिया भी। पर ज्यादातर लम्बी साँसें लेता हुआ कुछ यूँ लेटा रहा जैसे पलकें बंद हों और आँखें खुली। लो बादलों का क्राफिला न जाने कहाँ से आ धमका है। मैं बतला चुका हूँ कि पहाड़ों में बारिश का कुछ कह नहीं सकते कि अगर एक बार शुरू हुई तो न जाने कब रुकेगी। अब वास्को नीचे रुके हुए पानी से खेल रही है और मैं ऊपर आसमान में बादलों को निहार रहा हूँ। वास्को को कोई बारिश वाला नया कीड़ा मिल चुका है और वो उसकी ओर दोस्ती का हाथ बढ़ा चुकी है। अब मैं कीड़े को बहुत ही खतरनाक बता कर वास्को को वहाँ से टरकाने का प्रयत्न कर रहा हूँ पर वो जानना चाहती है कि क्या कीड़ा शेर से भी ज्यादा खतरनाक है। ऐसे में मजबूरन झूठ बोलना पड़ता है।

पर्वत चारों तरफ हरितिमा से लदा हुआ है। सामने की ओर बादलों की पतंगें उमड़-घुमड़ रही हैं। मुझे बादल बिन डोर की पतंग जैसे मालूम देते हैं जो हवाओं की चाल पर उड़ते हैं। या फिर शायद बादल एक यात्री हैं जो हवाओं की गाड़ी पर सैर करने निकलते हैं। बादलों का रेला देवदार के जंगलों की ओर बह पड़ा है। बादलों को बहते देख ऐसा लग रहा है मानो कोई पतंग कट गई हो। कटी पतंग को ओझल हो जाने तक देखना नियति है। बादलों के रेले से विलग हो एक छोटा-पतंगेसा बादल देवदार की टुकनी पर चढ़ जाना चाह रहा है। छोटा बादल फुनगी पर जाकर अटक गया है; जैसे पतंग फँस गई हो। बनारस में अपने बचपन के दिनों में मैंने बेल, आम, अमरूद, जामुन के पेड़ों से ऐसी बहुत सी पतंगें निकाली हैं। आज इस छोटे बादल को निकालने के लिए मन मचल रहा है। लो वास्को कीचड़ में गिर गई। आपकी नज़र हटी नहीं कि हो गया धमाला। अभी तक वो कीचड़ से खेल रही थी; और अब शायद कीचड़ भी खेल में शामिल हो गया था। यही होता है कल्पना का वास्तविकता से साक्षात्कार। मैंने वास्को की नन्हीं हथेलियों को मारिया के तने पर रगड़ कर साफ कर दिया है। कपड़े हाथ से झाड़ दिए हैं। दो-चार बार कह दिया है कि 'कुछ नहीं हुआ'। वह थोड़ा सा मुँह बनाकर अब सामान्य हो गई है।

आज के लिए इतना काफी है। मैं लौटना चाहता हूँ पर शायद वास्को का कीचड़ में नहाने का मन है। तरह-तरह की बातें बना फुसला रहा हूँ पर वास्को को वापस नहीं जाना। छोटा बादल अभी भी देवदार में अटका हुआ है। मैंने बोला कि चलो बादल से रेस लगाते हैं। यह बात वास्को को पसंद आ गई है। उसे घर वापस ले जाने के लिए मुझे कल्पना के उच्चतम स्तर तक जाकर बातें बनानी पड़ती हैं- जैसे मछली सो गई है या शेर को प्यास लगी है वो आने वाला है या फिर घर पर चॉकलेट की बारिश हो रही है। हर बहाना एक दो बार ही काम करता है। उसके बाद नया बहाना बनाना पड़ता है। चॉकलेट वाला बहाना तो पूरे एक हफ्ते तक चला था।

फिलहाल आसमान में चलते बादल से रेस लग चुकी है। वास्को के पैरों में मानो पंख लग चुके हैं और वह आगे-आगे दौड़ रही है। साथ में कहती जा रही है कि 'पापा मैं तो उड़ रहा हूँ... मैं तो बर्ड बन गया हूँ पापा...'। वह फुदकती जाती है और मैं मुस्कराता हुआ पीछे-पीछे चलता रहता हूँ कि कहीं वो फिसल कर गिर न जाए। उसे फिसलने की फिक्र नहीं रहती क्योंकि वो उड़ रही होती है। उड़ने का मन भला किसका नहीं

करता होगा। उसे देख बहुत कुछ अपना याद आता है जिसे मैं ज़िंदगी की दौड़ में कहीं भूल चुका होता हूँ जैसे याद आता है कि कभी मेरे हाथ भी पंख हुआ करते थे। मैं भी साथ में उड़ने की कोशिश करने लगता हूँ। हमें उड़ता देख वास्को की दादी दूर से चिल्ला रही है कि बच्चे के साथ बच्चे बने हुए हो... अभी गिरोगे तो हड्डियाँ जुड़ नहीं पाएंगी। मैं अपने हड्डियों की मजबूती चेक कर ही रहा होता हूँ कि वास्को की माँ ने प्रश्न दाग दिया है कि एक बच्चे के बाप हो गए हो कब अक्ल आएगी तुम्हें... अब मैं हड्डियाँ छोड़, अक्ल के आने की राह ढूँढ़ ही रहा होता हूँ कि वास्को का उड़ना रुक ही नहीं रहा है। उसकी बादलों से रेस जारी है। वह दोनों हाथ फैलाकर दौड़ रही है... कहती जा रही है कि पापा मैं उड़ रहा हूँ... पापा देखो मैं बर्ड बन गया हूँ न... ऐसा लगता है उसकी हँसी के साथ ये पेड़, ये पर्वत ये पूरी घाटी मुस्कुरा रही हो। लीजिये बूँदाबूँदी शुरू हो गई है; वास्को का उड़ना तेज हो गया है और मेरा उसे पकड़ना। अब मैंने उसे अपने कंधे पर बिठा लिया है। उसने अपनी टूटी-फूटी भाषा में 'लकड़ी की काठी' गाना शुरू कर दिया है। मुझे अपने पापा की याद आ गई है।

भारत सरकार
गृह मंत्रालय
राजभाषा विभाग
(सदैव ऊर्जावान; निरंतर प्रयासरत)

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 से 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से; अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से; प्रशिक्षण और प्राइज से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाये रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे; अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए; अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा हिंदी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे। हम राजभाषा के संवर्द्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

जय राजभाषा! जय हिंद!

लज्जा : शक्ति का मौन स्वरूप



विक्रान्त कुमार
सहायक लेखाधिकारी

आज जब हम "लज्जा" शब्द सुनते हैं, तो प्रायः हमारे मन में घूँघट, पर्दा, संकोच या सामाजिक बंधनों की छवि उभर आती है। आधुनिक समय में इस शब्द को कभी-कभी स्त्री की स्वतंत्रता के विरोधी रूप में भी प्रस्तुत किया जाता है। परन्तु यदि भारतीय दर्शन, वेदों, उपनिषदों और प्रकृति को ध्यान से देखें, तो ज्ञात होता है कि लज्जा का वास्तविक अर्थ छिपना नहीं, स्वयं को गरिमा के साथ धारण करना है। अतः यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि "लज्जा भय नहीं है, लज्जा मर्यादा है। लज्जा दुर्बलता नहीं, शक्ति का संयम है।" भारतीय संस्कृति में भी लज्जा को केवल स्त्री का आभूषण नहीं कहा, बल्कि सम्पूर्ण प्रकृति का स्वभाव माना है।

भारतीय दर्शन में लज्जा का अर्थ भय नहीं है। लज्जा वह आन्तरिक मर्यादा है जो शक्ति को संतुलित रखती है। जिस शक्ति के साथ विनम्रता जुड़ी हो, वही सृजन करती है। जिस शक्ति से मर्यादा अलग हो जाए, वही विनाश का कारण बनती है। परमाणु में अपार ऊर्जा है। यदि वह नियंत्रित रहे तो बिजली बनती है; यदि नियंत्रण खो दे तो विनाश का कारण बनती है। इसी प्रकार मनुष्य की शक्ति भी तभी कल्याणकारी होती है, जब उसके साथ लज्जा, संयम और विवेक जुड़े हों।

हमारे इतिहास ने नारी को कभी दुर्बल नहीं माना। उसे सरस्वती के रूप में ज्ञान दिया गया, लक्ष्मी के रूप में समृद्धि, अन्नपूर्णा के रूप में पालन, दुर्गा और काली के रूप में संहार की शक्ति। यह कोई विरोधाभास नहीं है, यह भारतीय चिंतन की सबसे बड़ी विशेषता है कि उसने नारी को कोमलता और सामर्थ्य—दोनों का संगम माना। सीता मर्यादा की प्रतिमूर्ति थीं, परन्तु उनका धैर्य सम्पूर्ण रामायण का आधार बना। द्रौपदी ने अन्याय के सामने मौन स्वीकार नहीं किया; उनकी पुकार ने महाभारत की दिशा बदल दी। रानी लक्ष्मीबाई ने मातृत्व और वीरता को एक साथ जीकर दिखाया। अहिल्याबाई होल्कर ने शासन किया, पर शासन में करुणा को कभी नहीं छोड़ा। इन सभी में लज्जा थी, पर वह भय नहीं थी।



प्रकृति ने सृजन का सबसे बड़ा उत्तरदायित्व स्त्री को दिया है। एक स्त्री अपने भीतर नौ महीनों तक एक नए जीवन का निर्माण करती है। वह केवल शरीर नहीं बनाती; हृदय की पहली धड़कन, मस्तिष्क की पहली कोशिका और जीवन की पहली साँस का आधार बनाती है। चिकित्सा विज्ञान बताता है कि प्रसव पीड़ा मानव जीवन की सबसे तीव्र पीड़ाओं में से एक है। फिर भी वही माँ, प्रसव के कुछ क्षण बाद अपने शिशु को मुस्कुराकर देखती है। यह केवल सहनशक्ति नहीं, यह प्रेम और शक्ति का अद्भुत संतुलन है। विज्ञान जितना आगे बढ़ रहा है, उतना ही वह प्रकृति के मौन को समझ रहा है। डी.एन.ए. की सूक्ष्म रचना में सम्पूर्ण जीवन का रहस्य छिपा है। हृदय दिन-रात धड़कता है, पर कभी अपने कार्य का शोर नहीं करता। धरती लगभग तीस किलोमीटर प्रति सेकंड की गति से सूर्य की परिक्रमा करती है, पर हमें उसकी गति का आभास भी नहीं होता। सबसे महान शक्तियाँ प्रायः सबसे अधिक शांत होती हैं। यही लज्जा का विज्ञान है।

आज की स्त्री अंतरिक्ष में है, वह वैज्ञानिक है, वह सैनिक है, वह न्यायाधीश है, वह उद्योग चला रही है। वह राष्ट्र का नेतृत्व कर रही है, समय बदल गया है और यह परिवर्तन स्वागत योग्य है, किन्तु एक प्रश्न आज भी उतना ही महत्वपूर्ण है—

क्या आधुनिकता का अर्थ अपनी करुणा, संवेदना और मर्यादा को पीछे छोड़ देना है? नहीं।

स्वतंत्रता और मर्यादा एक-दूसरे की विरोधी नहीं, बल्कि पूरक हैं, जिस प्रकार नदी अपने किनारों के कारण जीवन देती है, उसी प्रकार शक्ति अपनी मर्यादा के कारण पूजनीय बनती है। हमने लज्जा को केवल स्त्री से जोड़ दिया, जबकि इसकी आवश्यकता पुरुष को भी उतनी ही है। यदि पुरुष के पास शक्ति हो और लज्जा न हो, तो वह अहंकार बन जाता है। यदि स्त्री के पास सामर्थ्य हो और करुणा न हो, तो वह भी संतुलन खो देती है। वास्तव में लज्जा स्त्री या पुरुष का गुण नहीं है। यह मानवता का गुण है।

नारी की लज्जा उसका घूँघट नहीं, उसका आत्मबोध है। पुरुष की लज्जा उसका मौन नहीं, उसका चरित्र है। लज्जा पर्दा नहीं है, लज्जा कैद नहीं है, लज्जा आत्मसम्मान है। लज्जा वह सीमा है जहाँ शक्ति, अहंकार बनने से रुक जाती है।

"सृष्टि का पहला वस्त्र अंधकार था उसी से आरंभ हो आज भी सृष्टि गतिमान है, बीज का पहला वस्त्र मिट्टी है वहीं से अंकुरित हो वृक्ष के रूप में विकसित होता है। गर्भ का पहला वस्त्र माँ का शरीर है। पृथ्वी का पहला वस्त्र हरियाली है, पर्वत, नदी एवं समुद्र हैं। इसी प्रकार मानव का पहला वस्त्र लज्जा है।

जिस प्रकार प्रकृति अपनी सबसे मूल्यवान रचनाओं को कभी निर्वस्त्र नहीं करती उन्हें अपने आँचल में छिपाकर संरक्षण प्रदान करती है। उसी प्रकार हमें भी अपने नैतिक मूल्यों को कभी नहीं भूलना चाहिए, क्योंकि जहाँ मूल्य है, वहाँ संरक्षण है; जहाँ संरक्षण है, वहाँ मर्यादा है; और जहाँ मर्यादा है, वहीं लज्जा है।"

**"प्रांतीय ईर्ष्या-द्वेष को दूर करने में जितनी
सहायता हिंदी प्रचार से मिलेगी, उतनी
दूसरी किसी चीज से नहीं मिल सकती।"**

सुभाष चंद्र बोस



MAFANG ETF : वैश्विक तकनीकी क्रांति में निवेश का प्रवेश द्वार



एस० जे० रॉय चौधरी
पर्यवेक्षक

Mirae Asset NYSE FANG+ ETF (MAFANG) भारतीय शेयर बाजार में NSE तथा BSE पर सूचीबद्ध एक एक्सचेंज ट्रेडेड फंड है जो मुख्य रूप से वैश्विक तकनीकी क्षेत्र के सबसे शक्तिशाली कंपनियों जैसे कि Apple, Microsoft, Alphabet (Google), Amazon, Facebook (Meta), Netflix, Tesla तथा Nvidia के एक पोर्टफोलियो में निवेश करता है। एक भारतीय निवेशक के लिए इन कंपनियों में सीधे निवेश करना जटिल है। MAFANG ETF भारतीय निवेशकों को मात्र एक यूनिट की कीमत में इन कंपनियों में निवेश करने का अवसर देता है।

MAFANG में अत्यधिक उतार-चढ़ाव की एक बड़ी चुनौती जुड़ी है। ऐसे में MAFANG ETF में एकमुश्त (Lump sum) निवेश करना जोखिम भरा हो सकता है जिसको प्रबंधित करने और अस्थिरता का लाभ उठाने के लिए ग्रिड ट्रेडिंग (Grid Trading) के माध्यम से कॉस्ट एवरेजिंग (Cost Averaging) एक अच्छी रणनीति हो सकती है।

ग्रिड ट्रेडिंग और कॉस्ट एवरेजिंग : आमतौर पर जोखिम कम करने के लिए सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (SIP) से कॉस्ट एवरेजिंग का उपयोग किया जाता है जो रणनीति पूरी तरह से "समय" पर निर्भर करती है, "कीमत" पर नहीं। इस विधि से मूल्यों के अस्थायी उतार-चढ़ाव का फायदा नहीं उठाया जा सकता। इसके विपरीत, ग्रिड ट्रेडिंग आधारित कॉस्ट एवरेजिंग एक मूल्य-संचालित (Price-driven) रणनीति है जो समय का इंतजार नहीं करती, बल्कि बाजार की हर छोटी-बड़ी हलचल का सक्रिय रूप से लाभ उठाती है।

ग्रिड ट्रेडिंग की कार्यप्रणाली: इस रणनीति में MAFANG ETF के लिए एक विशिष्ट मूल्य का दायरा निर्धारित कर इस दायरे को कई बराबर स्तरों में विभाजित कर दिया जाता है, जिसे 'ग्रिड' कहते हैं। हर एक ग्रिड लाइन पर पहले से ही स्वचालित खरीद के ऑर्डर GTT सुविधा का उपयोग करते हुए सेट कर दिए जाते हैं। जब भी बाजार में उतार-चढ़ाव आता है, यह रणनीति स्वतः नई यूनिट्स खरीदकर आपकी औसत लागत को कम करती जाती है।

MAFANG ETF में ग्रिड रणनीति को लागू करना

1. मूल्य सीमा (Price Range) और ग्रिड संख्या का निर्धारण: सबसे पहले, निवेशक को MAFANG ETF के पिछले उच्च और निम्न स्तर का विश्लेषण करना होता है। मान लेते हैं कि वर्तमान में MAFANG ₹200 पर ट्रेड कर रहा है। निवेशक एक व्यावहारिक दायरा तय कर सकता है:

- ऊपरी सीमा (Upper Limit): ₹250
- निचली सीमा (Lower Limit): ₹150
- कुल दायरा: ₹100

यदि निवेशक इस ₹100 के अंतर को ₹10-10 के 10 ग्रिड्स में बाँटता है, तो स्तर इस प्रकार होंगे: ₹160, ₹170, ₹180, ₹190, ₹200, ₹210, ₹220, ₹230, ₹240, ₹250।

2. फंड का आवंटन (Fund Allocation) : ग्रिड ट्रेडिंग में निवेशक के पास हर गिरावट पर खरीदने के लिए पर्याप्त तरलता या लिक्विडिटी होनी चाहिए। यदि निवेशक ₹1,00,000 का निवेश करना चाहता है तो उसे 10 ग्रिड्स के अनुसार ₹10,000 प्रति ग्रिड में विभाजित कर सकता है।

3. स्वचालित ऑर्डर्स का निष्पादन :

- **क्रय आदेश (Buy Orders):** वर्तमान मूल्य (₹200) से नीचे तथा ऊपर के हर ग्रिड स्तर ₹160, ₹170, ₹180, ₹190, ₹200, ₹210, ₹220, ₹230, ₹240, ₹250 पर GTT बाय ऑर्डर लगा दिए जाते हैं।
- **विक्रय ऑर्डर्स (Sell Orders):** यदि निवेश दीर्घकालिक दृष्टिकोण के साथ है तो बिक्री आदेश व्यक्तिगत पसंद के अनुसार रखा जा सकता है।
- वास्तविक बाजार परिदृश्य
- **परिदृश्य 'अ' (बाजार में गिरावट):** यदि MAFANG ETF ₹200 से गिरकर ₹150 पर आ जाता है तो निवेशक की ₹160, ₹170, ₹180, ₹190 तथा ₹200 वाले ग्रिड्स सक्रिय हो जाएंगी और GTT सिस्टम स्वतः इन स्तरों पर निवेश कर लेगा। अब निवेशक की औसत निवेश लागत ₹200 से घटकर काफी कम हो जाएगी। यह कॉस्ट एवरेजिंग है, जहाँ निवेशक ने जानबूझकर गिरते बाजार में अपनी लागत कम की।
- **परिदृश्य 'ब' (बाजार में तेजी):** यदि MAFANG ETF ₹200 से बढ़कर ₹250 पर आ जाता है। इस दौरान निवेशक की ₹210, ₹220, ₹230, ₹240, ₹250 वाले ग्रिड्स सक्रिय हो जाएंगी और GTT सिस्टम स्वतः इन स्तरों पर निवेश कर लेगा। अब निवेशक की औसत खरीद लागत ₹250 - जो निवेशक की आखिरी निवेश है - से घटकर काफी कम हो जाएगी।

इस प्रकार, जहाँ एक सामान्य निवेशक बाजार के वापस अपने निचले स्तर पर आने का इंतजार करता रहता है परंतु भय के कारण निचले स्तरों पर भी निवेश नहीं कर पाता है या तो SIP का इंतजार करता है, वहीं ग्रिड ट्रेडिंग करने वाला निवेशक कॉस्ट एवरेजिंग की सहायता से उस गिरावट तथा तेजी में निवेश कर लेता है तथा अपने निवेश का औसत भी कम कर लेता है।

MAFANG ETF के लिए इस रणनीति के विशेष लाभ

1. अत्यधिक अस्थिरता (Volatility) का मुद्दीकरण: सामान्यतः निवेशक अस्थिरता से डरते हैं, लेकिन ग्रिड ट्रेडर के लिए अस्थिरता ही निवेश का जरिया है। MAFANG ETF जितना अधिक ऊपर-नीचे होगा, उतने ही अधिक ग्रिड ट्रिगर होंगे और उतनी ही अधिक बार औसत होगी।

2. मनोवैज्ञानिक पूर्वाग्रहों से मुक्ति (No Emotional Trading): ग्रिड-ट्रेडिंग रणनीति पूरी तरह से एल्गोरिदम या प्री-सेट ऑर्डर्स पर आधारित होती है, इसलिए इसमें मानवीय भावनाओं के लिए कोई जगह नहीं होती।

जोखिम, सीमाएं और महत्वपूर्ण सावधानियाँ

यद्यपि ग्रिड ट्रेडिंग के माध्यम से कॉस्ट एवरेजिंग एक बेहतरीन रणनीति है, लेकिन यह पूरी तरह से जोखिम-मुक्त भी नहीं है। निवेशकों को निम्नलिखित बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए:

- **पूंजी का फँसना :** यदि MAFANG ETF आपकी तय की गई निचली सीमा (₹150) से भी नीचे गिर जाता है, तो आपका 50 प्रतिशत पूंजी निवेशित होने के कारण फ्रीज हो सकती है।
- इसके विपरीत यदि आपके ऊपरी सीमा से ऊपर जाने के पश्चात बाजार में दोबारा गिरावट आ जाए तो भी आपकी पूंजी निवेशित होने के कारण फ्रीज हो सकती है।

MAFANG ETF दुनिया की सबसे शक्तिशाली टेक कंपनियों में, भारत में रहते हुए निवेश करने का एक बेजोड़ माध्यम है। ग्रिड ट्रेडिंग के माध्यम से कॉस्ट एवरेजिंग रणनीति उन निवेशकों के लिए आदर्श है जो तकनीकी क्षेत्र में भविष्य के असीमित विकास में भागीदार बनना चाहते हैं, परंतु बाजार के दैनिक उतार-चढ़ाव के तनाव से दूर रहना चाहते हैं।



प्रभात कुमार द्विवेदी
खण्डीय लेखाकार

बहुत पहले की बात है, भारत के सुदूर पश्चिम के एक प्रसिद्ध स्थान तक्षशिला में विश्वास नाम का एक व्यक्ति था। उसके पास संस्कारी पत्नी, एक पाँच वर्ष का बालक और कुछ गायें थीं। उसके बेटे का नाम हिन्दराज था। वे ग्रामीण अंचल में रहते हुए सामान्य जीवन व्यतीत करते थे।

विश्वास, हिन्दराज को लेकर चिंतित रहता था। वह अपने बेटे को एक सार्थक जीवन देना चाहता था, लेकिन उसे यह स्पष्ट नहीं था कि यह कैसे संभव होगा। वह रोज अपनी गायों को चराने गांव से दूर एक जंगल की ओर जाया करता था। एक बार गाय चराते हुए जंगल में उसे एक पुस्तक प्राप्त हुई। उस पुस्तक का कवर पेज फटा हुआ था। विश्वास उस पुस्तक को लेकर घर आ गया। घर आकर, उसने पुस्तक को एक कपड़े में लपेटकर सुरक्षित स्थान पर रख दिया और यह संकल्प लिया कि वह इस पुस्तक के कुछ पन्नों को रोज पढ़ेगा। संकल्प के अनुसार ही अपनी व्यस्त दिनचर्या से कुछ समय निकालकर वह पुस्तक जरूर पढ़ता था।



जब हिन्दराज छह वर्ष का हुआ तो विश्वास ने उसका यज्ञोपवीत संस्कार कराकर उसे गुरुकुल में दाखिला दिलवा दिया। गुरुकुल में रहते हुए हिन्दराज ने विभिन्न विषयों का अध्ययन किया। गुरुकुल में भौतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक सभी विषय पढ़ाए जाते थे। किताबी ज्ञान के साथ-साथ पढ़ी गई बातें व्यावहारिक शिक्षा प्रयोगों के माध्यम से सिखाई जाती थीं। गुरुकुल में रहते हुए हिन्दराज ने आत्मनिर्भरता, आपसी सहयोग और अनुशासित जीवन का पाठ सीखा। गुरुकुल में, उसने पच्चीस वर्ष की उम्र तक शिक्षा प्राप्त की। उसके बाद हिन्दराज गाँव आ गया और उसने धातुकर्म का व्यवसाय शुरू कर दिया जिसकी शिक्षा उसे गुरुकुल से प्राप्त हुई थी।

हिन्दराज के माता-पिता वृद्ध हो चुके थे। उन्होंने गोत्र, गुरु परंपरा और रक्त संबंधों को ध्यान में रखते हुए हिन्दराज का विवाह एक सौम्य नाम वाली, स्वस्थ, सुशील, सभ्य परिवार की सुन्दर कन्या से कर दिया। विवाह के दौरान विश्वास ने हिन्दराज और उसकी होने वाली पत्नी को यह बताया कि यह विवाह कोई सामाजिक समझौता नहीं बल्कि जन्म-जन्मांतर का रिश्ता है जिसे खत्म नहीं किया जा सकता। साथ ही भावी दंपती को धर्मपूर्वक, अर्थ और काम की प्राप्ति करते हुए गृहस्थ जीवन बिताने का संदेश भी दिया।

कुछ समय पश्चात् विश्वास और उसकी पत्नी चल बसे। विश्वास ने मृत्यु से पूर्व कपड़े में बंधी वह पुस्तक हिन्दराज को देते हुए यह कहा कि जीवन से संबंधित किसी भी प्रश्न का उत्तर इसमें मिल जाएगा। हिन्दराज ने उस पुस्तक को उसी आदर के साथ स्वीकार किया जिस आदर के साथ विश्वास ने उसे रखा था। हिन्दराज भी विश्वास की ही तरह अपनी दैनिक दिनचर्या से कुछ समय निकाल कर वह पुस्तक जरूर पढ़ता था।

हिन्दराज ने 50 वर्ष की अवस्था तक अपनी पत्नी के साथ शांतिपूर्ण गृहस्थ जीवन व्यतीत किया। इस दौरान उसने एक पुत्र और एक पुत्री को जन्म दिया। उसने अपनी संतानों को संस्कार और शिक्षा प्राप्ति के मार्ग पर आगे बढ़ाया। उसने धर्म पूर्वक धन कमाते हुए संत महात्माओं, गरीबों और समाज के अन्य जरूरतमंद लोगों की यथाशक्ति मदद की। उसने वृक्ष लगाए, जलवायु को स्वच्छ रखने का काम किया, अपनी आवश्यकताओं को सीमित रखते हुए उपभोग का स्तर कम रखा और समस्त पशु-पक्षी जगत् के प्रति उदारता दिखाई।

50 वर्ष की अवस्था प्राप्त कर लेने के बाद हिन्दराज और उसकी पत्नी ने अपने पुत्र और पुत्री का विवाह कर दिया और घर गृहस्थी के कार्यों से खुद को अलग कर लिया। यह अलगावपूर्ण नहीं था। पुत्र और पुत्री के गृहस्थ जीवन में आने वाली किसी भी दुविधा के संबंध में हिन्दराज और उसकी पत्नी ने सलाहकारी भूमिका निभाई। अंतिम निर्णय लेने की छूट, उन्होंने अपने पुत्र-पुत्री को ही प्रदान की। साथ ही दोनों ने आत्मा, परमात्मा और जगत के संबंध में चिंतन मनन प्रारंभ किया। सन्दर्भ के लिए, दोनों के पास अपने पचास वर्ष के जीवन के अनुभवों की पोटली थी। जिससे उन्हें अनेक सिद्धांतों को समझने में सहजता हुई।

हिन्दराज और उसकी पत्नी, जब पचहत्तर वर्ष की आयु के हुए। तब उन्होंने अपने अहंकार भाव, उसकी सत्यता को पूर्णतः पहचानते हुए उसे निराकार ईश्वर के समक्ष तिरोहित कर दिया। इस भाव ने उन्हें ध्यान और समाधि की अवस्था तक पहुंचने में अत्यंत मदद की। एक दिन हिन्दराज और उसकी पत्नी ने अत्यंत शांत भाव से अपने प्राणों का परित्याग किया। हिन्दराज के पुत्र ने दोनों का विधिपूर्वक अंतिम संस्कार किया।

एक दिन हिन्दराज का पुत्र जब अपने पिता की अलमारी देख रहा था तो उसे कपड़े में बंधी एक पुस्तक प्राप्त हुई। उसने कपड़े को खोला तो उसमें एक बहुत पुरानी पुस्तक रखी हुई थी। उसका कवर पेज फटा हुआ था, लेकिन उस पर हिन्दराज के हाथ से लिखा हुआ एक शीर्षक था। वह शीर्षक था- "भारतीय जीवन शैली"।



**"जिस देश को अपनी
भाषा और साहित्य के
गौरव का अनुभव नहीं है,
वह उन्नत नहीं हो सकता।"**

डॉ राजेंद्र प्रसाद



शिवम सिंह 'शिवोहम'
खण्डीय लेखाधिकारी

हे धीर धरो तुम अपने मन में,
स्वर्णिम यादों को इस चमन में।
भूल व्यथा को अग्रिम पथ पर,
तुम सहर्ष बढ़ो इस जीवन में॥

जीवन के इस उपवन में,
पुष्प प्रतिदिन डाली पर खिलते हैं
कुछ काल-मुख में झड़ जाते हैं
कुछ ही मन्दिर में चढ़ते हैं।

सागर में भी उठती है लहरें
यह सोच कि वे जाएँगी पार
पर लहरें लहरों में मिलकर
हो जाती उसी में निराकार।

पर्वतों पर भी अगणित
हिमानियाँ रहती है,
कुछ जा सागर में मिलती हैं,
तो कुछ वहीं पिघलती रहती हैं।

जीवन का उद्गम अगर
एक तथ्य है,
तो मृत्यु भी अटल
और शाश्वत सत्य है।

उदित होता प्रतिदिन का सूरज
प्रतिदिन ही अस्त होता है।
शशि भी रात्रि में होता प्रकाशित
प्रतिदिवस तो वह भी रिक्त होता है।





आजकल हमारे पहाड़ में रोपणी धान की रोपाई का कार्य जोरों पर है। जीतू बगडवाल की कथा भी इन्हीं रोपणी के दिनों से है। टिहरी बगुडी के मालिक जीतू खूब खेत खलिहानों सेरा फुंगडी व खूब गौड़ी, भैंसीयों व बकरियों का मालिक था और आलीशान जिन्दगी जीता था। रोपणियों के दिन नजदीक थे। इसलिए दो-तीन महीने पहले ही पंडित जी से शुभ लग्न निकलवाकर रोपणी का दिन 6 गते आषाढ़ व भुली सोवनी के हाथों तय हुआ। सोवनी जो जीतू की छोटी बहन थी, वो अपने ससुराल में थी। भरणा जो सोवनी की ननद और जीतू की स्याली थी उसे जीतू अत्यधिक प्रेम करता था व भुली के ससुराल स्याली भरणा से मिलने खूब जाया करता था। अब रोपणी की शुरुआत भी भुली सोवनी के हाथों थी तो उसे लेने उसके ससुराल जाना था। जीतू सिंह (जीतू) के माता-पिता ने राय मशवरा किया कि सोवनी को उसके ससुराल से लिवाने कौन जाएगा ? तो स्याली से मिलने को आतुर जीतू कहता है कि "मैं जाऊंगा"। तभी घर में बंधी तिला नाम की काली बकरी छींक देती है, तो जीतू के बूढ़े माता-पिता मायूस हो जाते हैं कि ये काली बकरी का छींकना शुभ नहीं है और सोचते हैं कि अब सोवनी को लेने जीतू को नहीं भोलू को भेजते हैं। भोलू जीतू का सेवक व अच्छा मित्र भी था। भोलू को घर के सभी सदस्य भी खूब मानते थे। तब जीतू कहता है- माँ! भोलू को भेजने में हमारी तौहीन होगी लोग बदनामी करेंगे कि एक सेवादार को बहन को लेने भेजा है। माता-पिता भी सोचते हैं कि जीतू का कहना भी ठीक ही है। माता-पिता का इकलौता बेटा जीतू बांसुरी बजाने का भी अच्छा कलाकार था। तब माता-पिता जीतू को सोवनी को लिवाने की आज्ञा दे देते हैं।



सोवनी के ससुराल के लिए भी दो रास्ते थे। एक ऊपर डाँडा धार कूंकू डाली से तो दूसरा नीचे गाँव की तलहटी से। ऊपर के रास्ते वनदेवियों-आछरियों (परियों) का डर था। इसलिए माता-पिता उसे नीचे के रास्ते जाने को कहते हैं और हिदायत देते हैं कि यदि ऊपर के रास्ते जाओ तो वहाँ बांसुरी मत बजाना। दिलो-दिमाग में स्याली भरणा की रट लिए सुन्दर रमणीक वादियों-फिजाओं का शौकीन जीतू ऊपर के रास्ते से ही जाता है और कूंकू डाली के समीप जाकर छाया में बैठ जाता है। वहाँ की सुंदरता उसे मोह लेती है और वह अपनी बांसुरी से मोहक धुनें निकालने लगता है। जिससे वहाँ आस-पास की वनपरियाँ मंत्रमुग्ध हो जाती हैं और जीतू के सम्मुख आकर कहती हैं कि आप बांसुरी के अच्छे कलाकार हो, हम आपको हरकर अपने साथ ले जायेंगे। तब जीतू उनसे बिनती करता है "हे वनदेवियों! मैं अपनी बहन को लेने उसके ससुराल जा रहा हूँ मेरी बहन मेरा रास्ता देख रही होगी। अगर मैं वहाँ नहीं पहुँचा तो वह दुखी होगी। छह गते आषाढ़ रोपणी का दिन है, उसी दिन मैं तुम्हें इसी स्थान पर मिलूँगा। आछरियाँ (वनपरियाँ) मान जाती हैं। धीरे-धीरे छह गते का दिन भी आया, बड़े हर्षोल्लास के साथ रोपणी शुरू हुई। लेकिन जीतू वनदेवियों को दिए वचन को भूल गया। तब वनदेवियाँ खेत से ही जीतू के प्राण हरकर ले जाती हैं और जीतू अपनी कथा के लिए अमर हो जाते हैं। आज भी हमारे पहाड़ के कई गाँवों में जीतू बगडवाल नृत्य का आयोजन होता है जिसमें जीतू बगडवाल देवियाँ व भोलू भी आत्मा के रूप में अवतरित होते हैं और कई गाँवों की ऊँची ऊँची धारों को भी बगडवाल धार के नाम से भी जानते हैं।

जय हो देवता जीतू बगडवाल की।

गणतंत्र दिवस – 2026



हिन्दी कार्यशालाएँ



महिला दिवस-2026



अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य पर दिनांक 09.03.2026 को कार्यालय द्वारा बहु-उद्देश्यीय हाल में महिला कर्मिकों के लिए विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया गया।



कार्यालय में आयोजित विभिन्न शिविर सेवाएँ



दिनांक 05-06 फरवरी तथा 09-10 फरवरी 2026 को कार्यालय में आधार कैंप आयोजित किया गया।



दिनांक 14.05.2026 को कार्यालय में स्वास्थ्य शिविर आयोजित किया गया।

श्री लोकेश दताल, वरिष्ठ उप महालेखाकार का विदाई कार्यक्रम तथा
सुश्री सरिता कुमारी गुप्ता, वरिष्ठ उप महालेखाकार का पदभार ग्रहण कार्यक्रम



कल्याण अनुभाग

1. श्री प्रभाकर मिश्रा, लेखाकार ने दिनांक 24.01.2026 से 27.01.2026 तक ऊना, हिमाचल प्रदेश में अखिल भारतीय बाबा भारती संयुक्त फुटबॉल प्रतियोगिता 2025-26 में प्रतिभाग किया।
2. श्री अभिषेक अग्रवाल, सहायक लेखाधिकारी, नीरू राणा, सहायक लेखाधिकारी, शिखा खंडूरी, सहायक पर्यवेक्षक तथा रोहित रतूड़ी, सहायक पर्यवेक्षक ने दिनांक 15.02.2026 से 21.02.2026 तक गोवा में अखिल भारतीय सिविल सेवा बैडमिंटन (पुरुष एवं महिला) प्रतियोगिता 2025-26 में प्रतिभाग किया।
3. श्री अभिषेक अग्रवाल, सहायक लेखाधिकारी एवं रोहित रतूड़ी, सहायक पर्यवेक्षक ने दिनांक 24.02.2026 से 27.02.2026 तक उत्तर प्रदेश, प्रयागराज में आयोजित उत्तर क्षेत्रीय बैडमिंटन प्रतियोगिता 2025-26 में प्रतिभाग किया।
4. श्री अभिषेक अग्रवाल, सहायक लेखाधिकारी ने दिनांक 06.03.2026 से 12.03.2026 तक अगरतला, त्रिपुरा में आयोजित अन्तर्क्षेत्रीय बैडमिंटन (वैटरन खिलाड़ी) 2025-26 प्रतियोगिता में प्रतिभाग किया।
5. श्रीमती शालू जाटव, वरिष्ठ लेखाकार ने दिनांक 13.03.2026 से 16.03.2026 तक मेघालय, शिलांग में आयोजित "अंतर्क्षेत्रीय कैरम प्रतियोगिता - 2025-26" में प्रतिभाग किया।
6. श्री संजीव जखमोला, सहायक पर्यवेक्षक ने दिनांक 16.03.2026 से 20.03.2026 तक जयपुर राजस्थान में पश्चिमी क्षेत्र क्रिकेट प्रतियोगिता 2025-26 में टेक्निकल ऑफिसियल के रूप में प्रतिभाग किया।
7. श्री राकेश कुमार, सहायक पर्यवेक्षक ने दिनांक 28.03.2026 से 31.03.2026 तक गांधीधाम, गुजरात में आयोजित 87वें अंतरराज्यीय सब-जूनियर एवं कैडेट प्रतियोगिता 2025 में मैनेजर-सह-कोच के रूप में प्रतिभाग किया।
8. श्री शुभम नेगी, लेखाकार ने दिनांक 07.04.2026 से 16.04.2026 तक ऊना, हिमाचल प्रदेश में HPCA द्वारा आयोजित विजय हजारे ट्रॉफी-2026-27 के चयन मैचों में प्रतिभाग किया।
9. श्री सन्नी राणा, सहायक पर्यवेक्षक ने दिनांक 20.04.2026 से 30.04.2026 तक BCCI से सम्बद्ध क्रिकेट एसोसिएशन ऑफ उत्तराखंड द्वारा देहरादून में आयोजित हाई-परफॉर्मेंस प्रिपेरेशन कैम्प 2026-27 में असिस्टेंट कोच के रूप में प्रतिभाग किया।
10. श्री राकेश कुमार, सहायक पर्यवेक्षक ने दिनांक 30.04.2026 से 04.05.2026 तक पुणे में आयोजित 32वीं मास्टर्स टेबल टेनिस प्रतियोगिता-2025 में प्रतिभाग किया।
11. श्री संजीव जखमोला, सहायक पर्यवेक्षक को देहरादून में होने वाले 42वें अखिल भारतीय उत्तराखण्ड गोल्ड कप क्रिकेट टूर्नामेंट - 2026 में सीएजी टीम का मैनेजर नियुक्त किया गया, जो टूर्नामेंट में विजयी रही।



हिमज्योति पत्रिका के सोलहवें अंक का विमोचन



डॉ० पारुल दीक्षित, एसोसिएट प्रोफेसर (विधि) डी०ए०वी० कॉलेज, देहरादून द्वारा दिनांक 19.06.2026 को आयोजित कार्यशाला एवं संवाद सत्र में कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न (निवारण, प्रतिषेध एवं प्रतिरोध) अधिनियम, 2013 के प्रावधानों पर प्रकाश डाला गया।



योग दिवस



वित्तीय साक्षरता कार्यशाला



नई टिहरी (17.04.2026)



अल्मोड़ा (24.06.2026)

सेवानिवृत्ति



दिनांक 30.01.2026 को श्री ब्रिजेन्द्र नाथ अग्रवाल, वरिष्ठ लेखाकार की सेवानिवृत्ति के अवसर पर श्री लोकेश दताल, वरिष्ठ उप महालेखाकार स्मृति चिन्ह तथा श्री अविनाश रंजन, वरिष्ठ लेखाधिकारी शुभकामनाएँ प्रदान करते हुए।



दिनांक 30.04.2026 को श्री राजकुमार मूसा, सहायक पर्यवेक्षक की सेवानिवृत्ति के अवसर पर श्री सुभाष चन्द्र ममगाँई, उप महालेखाकार पौधा भेंट करते हुए तथा सहकर्मी उन्हें फोटो भेंट करते हुए।



दिनांक 30.04.2026 को श्री जीवन सिंह सामंत, सहायक पर्यवेक्षक की सेवानिवृत्ति के अवसर पर मो. परवेज़ आलम, महालेखाकार पौधा भेंट करते हुए तथा सहकर्मी उन्हें भेंट देते हुए।

प्रशासनिक शब्दावली

अंग्रेजी	हिन्दी
Action may be taken as proposed	यथा प्रस्तावित कार्रवाई की जाए
According to merits	योग्यतानुसार
Action has already been taken in the matter	इस मामले में कार्रवाई की जा चुकी है
After due consideration	उचित विचार के पश्चात
After perusal	देखने के बाद
Arrange early disposal of case	मामले के शीघ्र निपटान की व्यवस्था की जाए
By the order of	के आदेश से
Call for quotation	कोटेशन मंगवाई जाए
Carry out orders	आदेश का पालन करें
Consolidated report may be furnished	समेकित रिपोर्ट प्रस्तुत करें
Disciplinary action may be taken	अनुशासनात्मक कार्रवाई की जाए
Ensure compliance	अनुपालन सुनिश्चित करें
Ex-parte decision	एक पक्षीय निर्णय
For sympathetic consideration	सहानुभूतिपूर्वक विचार के लिए
Held in abeyance	रोक कर रखी गई / स्थगित रखी गई
In the prescribed manner	निर्धारित ढंग से
Kindly acknowledge the receipt	कृपया पावती दें
Liable for disciplinary action	अनुशासनात्मक कार्रवाई की जा सकती है
Mentioned against each	प्रत्येक के सामने लिखा हुआ
Needful has been done	आवश्यक कार्रवाई की जा चुकी है
Objections have been dealt with	आपत्तियों पर विचार कर लिया गया है
Obtain signature	हस्ताक्षर करवाएं / हस्ताक्षर ले लें
Personal attention is required	व्यक्तिगत ध्यान देने की आवश्यकता है
Please put up with the relevant papers	कृपया सम्बंधित कागजों के साथ प्रस्तुत करें
Quash the proceeding	कार्रवाई रद्द करें
Resubmitted as desired	अपेक्षानुसार पुनः प्रस्तुत है
Rules were not properly followed	नियमों को उचित रूप से लागू नहीं किया गया
Should be given top priority	सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाए
Subject to approval	अनुमोदनार्थ
The proposal is self explanatory	प्रस्ताव स्वतः स्पष्ट है
This para may be dropped	यह पैरा निकाल दिया जाए
Through proper channel	उचित माध्यम से
Unauthorised	अनधिकृत
Under consideration	विचाराधीन
Vacancy may be immediately filled in	रिक्त पद तत्काल भरा जाए
Verified copy	सत्यापित प्रति
With full particulars	पूर्ण विवरण के साथ
Will be replied to accordingly	तदनुसार उत्तर भेजा जाएगा
Without further delay	और विलम्ब किए बिना
Your remark on the above subject is awaited	उपरोक्त विषय पर आपकी टिप्पणी की प्रतीक्षा है



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) उत्तराखण्ड, देहरादून